اَیُنَ الشَّاکِرُوْنَ؟

شکر گزار کہاں ہیں؟

eBook

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَيْنَ الشَّاكِرُوْنَ؟

शुक्रगुज़ार कहाँ हैं?

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नाम किताब	-----------	اَيۡنَ الشّٰاكِرُوۡنَ؟ शुक्रगुज़ार कहाँ हैं?
तालीफ़	-----------	नामालूम
नासिर-ए-अव्वल	-----------	दारुल वतन
नासिर	-----------	अल हुदा पब्लिकेशन, इस्लामाबाद
एडिशन	-----------	अव्वल
तादाद	-----------	5000
ISBN	-----------	978-969-8665-04-8
क़ीमत	-----------	
तारीख़ इशाअत	-----------	मार्च, 2016 ई०

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

मिलने के पते

INDIA

AlHuda Welfare Trust India,Post Box Number 444
Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
+918040924255 , +91-9535612224
alhuda.india@gmail.com

AMERICA

PO Box 2256 Keller TX 76244
+1-817-285-9450 +1-480-234-8918
www.alhudaonlinebooks.com

CANADA

5671 McAdam Rd ON L4Z IN9 Mississauga Canada
+1-905-624-2030 +1-647-869-6679
www.alhudainstitute.ca

UK

14 Wangey Road, Chadwell Heath Essex RM6 4AJ
London U.K.
+44-20-8599-5277 +44-78-8979-0369
alhudaproducts.uk@gmail.com

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَصۡلُ الشُّكۡرِ

قَالَ ابۡنُ الۡقَيِّمِ رَحِمَهُ اللّٰهُ:

هُوَ الۡاِعۡتِرَافُ بِاِنۡعَامِ الۡمُنۡعِمِ عَلٰى وَجۡهِ الۡخُضُوۡعِ لَهُ وَالذُّلِّ وَالۡمَحَبَّةِ،

فَمَنۡ لَّمۡ يَعۡرِفِ النِّعۡمَةَ بَلۡ كَانَ جَاهِلًا بِهَا لَمۡ يَشۡكُرۡهَا

وَمَنۡ عَرَفَهَا وَلَمۡ يَعۡرِفِ الۡمُنۡعِمَ بِهَا لَمۡ يَشۡكُرۡهَا اَيۡضًا،

وَمَنۡ عَرَفَ النِّعۡمَةَ وَالۡمُنۡعِمَ لٰكِنۡ جَحَدَهَا كَمَا يَجۡحَدُ الۡمُنۡكِرُ لِنِعۡمَةِ الۡمُنۡعِمِ عَلَيۡهِ بِهَا فَقَدۡ كَفَرَهَا،

وَمَنۡ عَرَفَ النِّعۡمَةَ وَالۡمُنۡعِمَ وَاَقَرَّ بِهَا وَلَمۡ يَجۡحَدۡهَا وَلٰكِنۡ لَمۡ يَخۡضَعۡ لَهُ وَيُحِبُّهُ وَيَرۡضَ بِهِ وَعَنۡهُ لَمۡ يَشۡكُرۡهَا اَيۡضًا،

وَمَنۡ عَرَفَهَا وَعَرَفَ الۡمُنۡعِمَ بِهَا وَاَقَرَّبِهَا وَخَضَعَ لِلۡمُنۡعِمِ بِهَا وَاَحَبَّهُ وَرَضِىَ بِهِ وَعَنۡهُ وَاسۡتَعۡمَلَهَا فِىۡ مَحَابِّهِ وَطَاعَتِهِ فَهٰذَا هُوَ الشَّاكِرُ لَهَا۔ [طريق الهجرتين و باب السعادتين،ج:1،ص:95]

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

शुक्र की असल

इब्ने क़य्यिम رحمة الله कहते हैं:

शुक्र की असल नेअमत देने वाले की नेअमत का आजिज़ी, इंकिसारी और मोहब्बत से ऐतराफ करना है। पस जो शख़्स नेअमत को नहीं पहचानता बल्कि वह उससे जाहिल है तो वह उसका शुक्र भी अदा नहीं कर सकता। जो नेअमत को तो पहचानता है लेकिन उस नेअमत के देने वाले की मारफ़त नहीं रखता उसने भी शुक्र अदा नहीं किया।

और जो नेअमत और नेअमत देने वाले की मारफ़त तो रखता है लेकिन उस नेअमत का इंकार करता है जिस तरह मुंकर अपने ऊपर मुनअम की नेअमतों का इंकार करता है तो उसने भी नाशुक्री की। जो नेअमत और नेअमत अता करने वाले को पहचानता है और उसका इक़रार भी करता है उसका इंकार नहीं करता लेकिन नेअमत देने वाले के लिए आजिज़ी इख़्तियार नहीं करता ना उससे मोहब्बत करता है और ना ही उससे राज़ी होता है उसने भी शुक्र अदा नहीं किया।

जिसने नेअमत और नेअमत देने वाले को पहचान लिया और उस नेअमत का इक़रार किया और नेअमत देने वाले के लिए आजिज़ी इख़्तियार की, उससे मोहब्बत की, उससे राज़ी हो गया और उस नेअमत को देने वाले की महबूब जगह और उसी इताअत में खर्च किया तो दरअसल यह है शुक्र अदा करने वाला।

اَیۡنَ الشَّاکِرُوۡنَ؟

اَلۡـحَـمۡـدُ لِـلّٰـهِ الَّذِیۡ جَعَلَ الشُّکۡرَ مِنۡ اَجَلِّ مَنَازِلِ السَّائِـرِیۡنَ، وَالصَّلَاۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الشَّاکِرِیۡنَ،وَاِمَامِ الۡحَامِدِیۡنَ،نَبِیِّنَا مُحَمَّدٍ،وَعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحۡبِهٖ وَسَلَّمَ اَجۡمَعِیۡنَ. اَمَّا بَعۡدُ:

اَخِـی الۡـمُسۡلِمَ!اِنَّ نِعَمَ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡنَا کَثِیۡرَۃٌ،وَمِنَنَهٗ جَسِیۡمَۃٌ، وَفَضۡـلَـهٗ کَبِیۡـرٌ،فَکَمۡ مِّنۡ خَیۡرٍ اَرۡسَاهُ!وَکَمۡ مِّنۡ مَّعۡرُوۡفٍ اَسۡدَاهُ! وَکَـمۡ مِّـنۡ بَـلِیَّۃٍ دَفَعَهَا!وَکَمۡ مِّنۡ نِّقۡمَۃٍ رَدَّهَا!﴿وَاِنۡ تَعُدُّوۡا نِعۡمَۃَ اللّٰهِ لَا تُحۡصُوۡهَا اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَظَلُوۡمٌ کَفَّارٌ﴾ [ابراهیم:34].

शुक्रगुज़ार कहाँ हैं?

तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने शुक्र को इस रास्ते पर चलने वालों के मरातिब में से सबसे बड़ा मरतबा क़रार दिया। दरूदो सलाम हो शुक्रगुज़रों के सरदार, हम्द करने वालों के इमाम, हमारे नबी मौहम्मद , उनकी आल और उनके असहाब पर और सबके सब पर सलामती हो। इसके बाद:

ऐ मेरे मुस्लमान भाई! बेशक हम पर अल्लाह की बेपनाह नेअमतें हैं, उसके अहसानात अज़ीम हैं और उसका फज़ल बहुत बड़ा है कि उसने कितनी नेकियाँ साबित कीं और कितने ही अहसानात हैं जो उसने अता फरमाए, कितनी ही मुसीबतें टाल दीं और कितने ही अज़ाब उसने लौटा दिए, "और अगर तुम अल्लाह की नेअमतों को शुमार करना चाहो तो उनको शुमार ना कर सकोगे। बेशक इंसान यक़ीनन बहुत ज़ालिम बड़ा नाशुक्रा है।"

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَضِيْلَةُ الشُّكْرِ وَالشَّاكِرِيْنَ

اَخِی الْكَرِيْمَ!

1.اَمَرَاللّٰهُ تَعَالٰی عِبَادَهُ بِشُكْرِهِ،وَالْاِعْتِرَافِ بِفَضْلِهِ،قَالَ سُبْحَانَهُ:﴿فَاذْكُرُوْنِیْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِیْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ﴾[البقرة:152] وَقَالَ سُبْحَانَهُ:﴿اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَلِوَالِدَيْكَ اِلَیَّ الْمَصِيْرُ﴾[لقمٰن:14]

2.وَاَخْبَرَ سُبْحَانَهُ اَنَّهُ لَا يُعَذِّبُ الشَّاكِرِيْنَ مِنْ عِبَادِهِ،فَقَالَ سُبْحَانَهُ:﴿مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ﴾[النساء:147]

3.وَبَيَّنَ سُبْحَانَهُ اَنَّ الشَّاكِرِيْنَ هُمُ الْمَخْصُوْصُوْنَ بِفَضْلِهٖ وَمِنَّتِهِ عَلَيْهِمْ مِّنْ بَيْنِ عِبَادِهِ،فَقَالَ سُبْحَانَهُ:﴿وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ﴾[الانعام:53]

4.وَقَسَمَ اللّٰهُ النَّاسَ اِلٰی شَكُوْرٍ وَكَفُوْرٍ،فَاَبْغَضُ الْاَشْيَاءِ اِلَيْهِ الْكُفْرُ وَاَهْلُهُ،وَاَحَبُّ الْاَشْيَاءِ اِلَيْهِ الشُّكْرُ وَاَهْلُهُ،قَالَ تَعَالٰی:﴿اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا﴾[الانسان:3]

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

शुक्र और शुक्रगुज़ारों की फज़ीलत

ऐ मेरे मौअजज़्ज़ भाई!

1. अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को हुक्म दिया है कि वह उसका शुक्र अदा करें और उसके फज़ल का ऐतराफ करें, अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: "पस तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूँगा और तुम मेरा शुक्र अदा किया करो और मेरी नाशुक्री ना किया करो।" और अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: "कि मेरा शुक्र अदा करो और अपने वालिदैन का भी, मेरी ही तरफ लौटना है।"

2. और अल्लाह सुब्हाना ने ख़बर दी है कि बेशक वह अपने बन्दों में से शुक्रगुज़ारों को अज़ाब नहीं देता। पस अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: "अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम शुक्र अदा करो और तुम ईमान ले आओ।"

3. और अल्लाह सुब्हाना ने वाज़ेह कर दिया है कि उसके बन्दों में से शुक्र करने वाले ही उसके फज़ल और उसके अहसान के साथ ख़ास किए गए हैं, तो अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: "और इसी तरह हमने उनके बाज़ को बाज़ के साथ आज़माया ताकि वह कहें क्या यह हैं वह लोग जिन पर अल्लाह ने हमारे दर्मियान में से अहसान फ़रमाया? क्या अल्लाह शुक्रगुज़ारों को नहीं जानता?"

4. और अल्लाह ने लोगों को शुक्रगुज़ारों और नाशुक्रों में तक़सीम कर दिया है। तो उसके नज़दीक चीज़ों में से सबसे मबगूज़ चीज़ नाशुक्री और नाशुक्री करने वाले हैं और सबसे महबूब शुक्र और शुक्र करने वाले हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "बिलाशुबा हमने उसे रास्ता दिखाया, ख़्वाह वह शुक्र करने वाला बने और ख़्वाह नाशुक्रा।"

وَقَالَ سُبْحَانَهُ: ﴿اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۭ﴾ [الزمر:7]

5.وَاَخْبَرَ سُبْحَانَهُ اَنَّ حِفْظَ النِّعَمِ وَاسْتِمْرَارَهَا، وَعَدَمَ زَوَالِهَا، وَزِيَادَتَهَا، مَقْرُوْنٌ بِالشُّكْرِ، فَقَالَ عَزَّوَجَلَّ: ﴿وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِيْدٌ﴾ [ابراهيم:7]

• اَيْنَ اِخْوَانِی الشَّاكِرُوْنَ لِلنِّعَمِ؟ اَيْنَ الْحَافِظُوْنَ لِلذِّمَمِ؟ اَيْنَ اَهْلُ الْفَضْلِ وَالْكَرَمِ؟

6.وَبَيَّنَ سُبْحَانَهُ اَنَّ الشَّاكِرِيْنَ قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِهِ، وَاَنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ عَلٰى خِلَافِ هٰذِهِ الصِّفَةِ، قَالَ سُبْحَانَهُ: ﴿وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِیَ الشَّكُوْرُ﴾ [سبا:13]

7.وَاَطْلَقَ سُبْحَانَهُ جَزَاءَ الشَّاكِرِيْنَ اِطْلَاقًا، وَجَعَلَهُ عَلَيْهِ سُبْحَانَهُ، فَقَالَ عَزَّوَجَلَّ: ﴿وَسَنَجْزِی الشّٰكِرِيْنَ﴾ [ال عمران:145]

وَقَالَ سُبْحَانَهُ: ﴿وَسَيَجْزِی اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ﴾ [ال عمران:144]

8.وَاَخْبَرَ سُبْحَانَهُ اَنَّ الشَّاكِرِيْنَ هُمْ اَهْلُ عِبَادَتِهِ، وَاَنَّ مَنْ لَّمْ يَشْكُرْهُ لَا يَكُوْنُ مِنْ اَهْلِ عِبَادَتِهِ، فَقَالَ سُبْحَانَهُ: ﴿وَاشْكُرُوْا

और अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: “अगर तुम नाशुक्री करोगे तो यक़ीनन अल्लाह तुमसे बहुत बेनियाज़ है और वह अपने बन्दों के लिए नाशुक्री को पसंद नहीं करता और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करता है।”

5. और अल्लाह सुब्हाना ने इस बात की ख़बर दी है कि नेअमतों की हिफाज़त, उनका क़ायम रहना और ख़त्म ना होना और उन नेअमतों में इज़ाफा होना शुक्रगुज़ारी के साथ मुंसलिक (शामिल) है। तो अल्लाह अज़ व जल्ल ने फ़रमाया: “और जब तुम्हारे रब ने आगाह कर दिया कि अलबत्ता अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं ज़रूर तुम्हें मज़ीद अता करूँगा और अलबत्ता अगर तुमने नाशुक्री की तो बिलाशुबा मेरा अज़ाब यक़ीनन बहुत सख़्त है।”

कहाँ हैं मेरे वह भाई जो नेअमतों का शुक्र करने वाले हैं? ज़िम्मों की हिफाज़त करने वाले कहाँ हैं? फज़लो करम वाले कहाँ हैं?

6. और अल्लाह सुब्हाना ने खोल कर बयान कर दिया कि उसके बन्दों में से बहुत थोड़े ही शुक्रगुज़ार हैं और अक्सर लोग इस सिफ़त के बरअक्स हैं। अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: “और मेरे बन्दों में से कम ही लोग शुक्रगुज़ार होते हैं।”

7. और अल्लाह सुब्हाना ने शुक्र करने वालों की जज़ा को मुतलक़ रखा है (यानि मिक़दार मुक़र्रर नहीं की) और अल्लाह सुब्हाना ने इसको अपने ज़िम्मे ठहराया है। पस अल्लाह अज़ व जल्ल ने फ़रमाया: “और हम शुक्र करने वालों को जल्द जज़ा देंगे”, और अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: “और अल्लाह शुक्र करने वालों को जल्द जज़ा देगा।”

8. और अल्लाह सुब्हाना ने इस बात की भी ख़बर दी है कि यक़ीनन शुक्र करने वाले ही दरअसल उसकी इबादत करने करने वाले हैं और जो उसका शुक्र अदा नहीं करता तो वह उसकी इबादत करने वालों में से नहीं होता। पस अल्लाह सुब्हाना ने फ़रमाया: “और अल्लाह का शुक्र अदा करो,

لِلّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ اِيَّاهُ تَعۡبُدُوۡنَ﴾ [البقرة:172]

9.وَاَخۡبَرَ سُبۡحَانَهُ اَنَّ رِضَاهُ فِىۡ شُكۡرِهٖ،فَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاِنۡ تَشۡكُرُوۡا يَرۡضَهُ لَكُمۡ﴾ [الزمر:7]

10.وَبَيَّنَ سُبۡحَانَهُ اَنَّ الشُّكۡرَ هُوَ اَفۡضَلُ الۡخِصَالِ وَاَعۡلَاهَا، وَلِذٰلِكَ اَثۡنٰى بِهٖ عَلٰى خَلِيۡلِهٖ اِبۡرَاهِيۡمَ، وَجَعَلَهُ غَايَةَ صِفَاتِهٖ، فَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ اِبۡرٰهِيۡمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيۡفًا ؕ وَلَمۡ يَكُ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ۝ شَاكِرًا لِّاَنۡعُمِهٖ...﴾ الاٰية: [النحل:120-121]

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

अगर तुम सिर्फ उसी की इबादत करते हो।"

9. और अल्लाह सुब्हाना ने इस बात की ख़बर दी कि बेशक उसकी रज़ा उसकी शुक्रगुज़ारी करने में है। पस अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और अगर तुम शुक्र करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करता है।"

10.और अल्लाह सुब्हाना ने यह भी वाज़ेह फ़रमाया कि बेशक शुक्र सब ख़सलतों में से अफ़ज़ल और आला ख़सलत है, इसी बिना पर उसने इस सिफ़त के साथ अपने ख़लील इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तारीफ की और इसे उनकी सिफ़ात में से आला दरजे की सिफ़त बनाया। पस अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "बेशक इब्राहीम एक उम्मत था, अल्लाह का फरमाबरदार, यक्सू और वह मुशरिकों में से ना था। उसकी नेअमतों पर शुक्रगुज़ार था...आयत।"

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

حَقِيُقَةُ الشُّكُرِ

• اَخِی الُمُسُلِمَ الُمُوَفَّق!اَلشُّكُرُ مِنُ اَعُلَی الُمَنَازِلِ وَاَرُقَی الُمَقَامَاتِ،وَهُوَ نِصُفُ الُاِیُمَانِ،فَالُاِیُمَانُ نِصُفَانِ؛نِصُفٌ شُكُرٌ وَنِصُفٌ صَبُرٌ.وَالشُّكُرُ مَبُنِیٌّ عَلٰی خَمُسِ قَوَاعِدَ:

اَلُاُوُلٰی:خُضُوُعُ الشَّاكِرِ لِلُمَشُكُوُرِ.

اَلثَّانِيَةُ:حُبُّهُ لَهُ.

اَلثَّالِثَةُ:اِعُتِرَافُهُ بِنِعُمَتِهِ.

اَلرَّابِعَةُ:ثَنَاؤُهُ عَلَيُهِ بِهَا.

اَلُخَامِسَةُ:اَلَّا يَسُتَعُمِلَ النِّعُمَةَ فِيُمَا يَكُرَهُ الُمُنُعِمُ.

• فَالشُّكُرُ اِذَنُ هُوَ:اَلُاِعُتِرَافُ بِنِعُمَةِ الُمُنُعِمِ عَلٰی وَجُهِ الُخُضُوُعِ،وَاِضَافَةُ النِّعَمِ اِلٰی مُوُلِيُهَا،وَالثَّنَاءُ عَلَی الُمُنُعِمِ بِذِكُرِ اِنُعَامِهِ،وَعُكُوُفُ الُقَلُبِ عَلٰی مَحَبَّتِهِ،وَالُجَوَارِحِ عَلٰی طَاعَتِهِ، وَجَرُيَانُ اللِّسَانِ بِذِكُرِهِ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

शुक्र की हक़ीक़त

ऐ मेरे तौफीक़ दिए हुए मुस्लमान भाई! शुक्र तमाम मरतबों में आला और तमाम दरजात में बुलन्दतरीन है, यह निस्फ़ ईमान है। पस ईमान के दो हिस्से हैं; आधा हिस्सा शुक्र है और आधा सब्र और शुक्र पाँच क़वाइद पर मब्नी है:

पहला क़ायदा: शुक्र करने वाले का उस ज़ात के लिए आजिज़ी करना जिसका शुक्र अदा किया जाता है।

दूसरा क़ायदा: उसका उससे मोहब्बत करना।

तीसरा क़ायदा: उसका उसकी नेअमत का ऐतराफ करना।

चौथा क़ायदा: उसका उस (नेअमत की) वजह से उसकी तारीफ़ करना।

पाँचवा क़ायदा: नेअमत को मुनइम (नेअमत देने वाले) के नापसंदीदा कामों में इस्तिमाल करना।

तो शुक्र यह है कि: आजिज़ी का इज़हार करते हुए मुनइम (नेअमत देने वाला) की नेअमतों का ऐतराफ करना, नेअमतों की निस्बत उसके अता करने वाले की तरफ करना, मुनइम के ईनाम का ज़िक्र करके उसकी तारीफ़ करना, दिल का उसकी मोहब्बत और आज़ा का उसकी इताअत पर जम जाना और ज़बान पर उसका ज़िक्र जारी रहना।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ثَنَاءٌ نَبَوِیٌّ

• كَانَ النَّبِيُّ ﷺ اِذَا اَصْبَحَ وَاِذَا اَمْسٰی يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ، وَاَخْبَرَ ﷺ اَنَّ مَنْ قَالَهَا حِيْنَ يُصْبِحُ فَقَدْ اَدّٰى شُكْرَ يَوْمِهِ، وَمَنْ قَالَهَا حِيْنَ يُمْسِيْ فَقَدْ اَدّٰى شُكْرَ لَيْلَتِهِ. [اَبُوْ دَاوُدَ، وَحَسَّنَهُ ابْنُ حَجَرٍ وَالنَّوَوِيُّ] ضعيف

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، اللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَسُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ. (صحيح مسلم:6848)

“अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। अल्लाह सबसे बड़ा है और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है बहुत ज़्यादा और पाक है अल्लाह जो तमाम जहानों का रब है। (बुराई से बचने की) ताक़त और (नेकी करने की) क़ुव्वत अल्लाह (की तौफ़ीक़) के बग़ैर नहीं जो बहुत ज़बरदस्त, बहुत हिकमत वाला है।” (सही मुस्लिम:6848)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नबी के तारीफ़ी कलिमात

नबी जब सुबह करते और जब शाम करते तो फरमाते: “ऐ अल्लाह! मुझे या तेरी मख़्लूक़ में से किसी को जो नेअमत भी हासिल है तो वह तेरी ही तरफ़ से है, तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं, पस तेरी ही हम्द और तेरा ही शुक्र है।” और आप ने यह ख़बर दी कि “बेशक जिसने सुबह के वक़्त यह कलिमात कहे तो उसने अपने उस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिसने शाम के वक़्त यह कलिमात कहे तो उसने अपनी उस रात का शुक्र अदा कर लिया।”

سُبُحَانَ اللّٰہِ لَا شَرِیْکَ لَهُ،لَـهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ،
سُبُحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ. (الادب المفرد:638)

“अल्लाह पाक है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, उसी के लिए तमाम तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर है। (बुराई से बचने की) ताक़त और (नेकी करने की) क़ुव्वत अल्लाह (की तौफ़ीक़) के बग़ैर नहीं, अल्लाह पाक है और उसी की तारीफ़ है।” (अल अदब अल मुफरद:638)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَقْسَامُ الشُّكْرِ

• قَالَ الْاِمَامُ ابْنُ رَجَبٍ: وَالشُّكْرُ بِالْقَلْبِ وَاللِّسَانِ وَالْجَوَارِحِ.

• فَالشُّكْرُ بِالْقَلْبِ: اَلْاِعْتِرَافُ بِالنِّعَمِ لِلْمُنْعِمِ، وَاَنَّهَا مِنْهُ وَبِفَضْلِهِ.

وَمِنَ الشُّكْرِ بِالْقَلْبِ: مَحَبَّةُ اللّٰهِ عَلٰى نِعَمِهِ.

• قَالَ بَعْضُهُمْ: "اِذَا كَانَتِ الْقُلُوْبُ جُبِلَتْ عَلٰى مَحَبَّةِ مَنْ اَحْسَنَ اِلَيْهَا، فَوَاعَجَبًا لِمَنْ لَّا يَدْرِىْ مُحْسِنًا اِلَّا اللّٰهَ! كَيْفَ لَا يَمِيْلُ بِكُلِّيَّتِهِ اِلَيْهِ؟".

• وَقَالَ بَعْضُهُمْ:

اِذَا اَنْتَ لَمْ تَزْدَدْ عَلٰى كُلِّ نِعْمَةٍ لِمُؤْتِيْكِهَا حُبًّا فَلَسْتَ بِشَاكِرٍ،

اِذَا اَنْتَ لَمْ تُؤْثِرْ رِضَا اللّٰهِ وَحْدَهُ عَلٰى كُلِّ مَا تَهْوٰى فَلَسْتَ بِصَابِرٍ.

शुक्र की अक़साम (क़िस्में)

✦ इमाम इब्ने रजब कहते हैं: और शुक्र दिल, ज़बान और आज़ा से होता है।

✦ दिल का शुक्र यह है कि: मुनइम (नेअमत देने वाले) की नेअमतों का ऐतराफ करना और यह कि बेशक यह नेअमतें उसकी तरफ से हैं और उसके फ़ज़्ल से हैं।

✦ और दिल के शुक्र में से यह भी है कि इंसान नेअमतों के मिलने पर अल्लाह से मोहब्बत करे।

✦ बाज़ ने कहा: जब दिल अहसान करने वाले की मोहब्बत पर पैदा किए गए हैं तो तअज्जुब है उस शख़्स पर जो अल्लाह के सिवा किसी को मोहसिन नहीं समझता फिर वह क्योंकर मुकम्मल तौर पर उसकी तरफ माइल नहीं होता?!"

✦ और बाज़ ने कहा:

"अगर हर नई नेअमत के मिलने पर तुम्हारे (दिल) में उसके अता करने वाले की मोहब्बत में इज़ाफ़ा नहीं होता तो तुम शुक्रगुज़ार नहीं हो, और अगर तुम अल्लाह अकेले की रज़ा को अपनी हर ख़्वाहिश पर मुक़द्दम नहीं रखते तो फिर तुम साबिर भी नहीं हो।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

• وَالشُّكْرُ بِاللِّسَانِ: اَلثَّنَاءُ بِالنِّعَمِ،وَذِكْرُهَا وَتَعْدَادُهَا وَاِظْهَارُهَا،قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی:﴿وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّکَ فَحَدِّثْ﴾ [الضحٰی:11] .

• وَكَانَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيْزِ يَقُوْلُ فِیْ دُعَائِهِ:"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ اَنْ اُبَدِلَ نِعْمَتَکَ کُفُرًا،اَوْاَنْ اَکْفُرَهَا بَعْدَ مَعْرِفَتِهَا،اَوْ اَنْسَاهَا فَلَا اُثْنِیْ بِهَا" .

• وَقَالَ فُضَيْلٌ:" كَانَ يُقَالُ:مِنْ شُكْرِ النِّعْمَةِ التَّحَدُّثُ بِهَا"، وَجَلَسَ لَيْلَةً هُوَ وَابْنُ عُيَيْنَةَ يَتَذَاكَرَانِ النِّعَمَ اِلَى الصَّبَاحِ!!.

• وَالشُّكْرُ بِالْجَوَارِحِ:اَلَّا يُسْتَعَانَ بِالنِّعَمِ اِلَّا عَلٰی طَاعَةِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ،وَاَنْ يَّحْذُرَ مِنِ اسْتِعْمَالِهَا فِیْ شَیْءٍ مِّنْ مَّعَاصِيْهِ،قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی:﴿ اِعْمَلُوْۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا﴾ [سبا:13] .

• قَالَ بَعْضُ السَّلَفِ:"لَمَّا قِيْلَ لَهُمْ هٰذَا،لَمْ تَاْتِ عَلَيْهِمْ سَاعَةٌ اِلَّا وَفِيْهِمْ مُصَلٍّ" .

• وَمَرَّ ابْنُ الْمُنْكَدِرِ بِشَابٍّ يُقَاوِمُ امْرَاَةً فَقَالَ:"يَا بُنَیَّ!مَا هٰذَا جَزَاءُ نِعْمَةِ اللّٰهِ عَلَيْکَ!!.

✦ और ज़बान का शुक्र यह है कि नेअमतों की तारीफ़, उनका तज़किरा और उनको शुमार किया जाए और उनका इज़हार किया जाए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “और अपने रब की नेअमतों का तज़किरा करते रहा कीजिए।”

✦ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अपनी दुआ में कहा करते थे: “ऐ अल्लाह! बेशक मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि मैं तेरी नेअमत को नाशुक्री से बदल दूँ या मैं उसको पहचानने के बाद उसका इंकार कर दूँ या मैं उसको भुला दूँ और उस नेअमत पर तेरी तारीफ़ ना करूँ।”

✦ फ़ज़ील कहते हैं कि: “कहा जाता था नेअमत का शुक्र अदा करना यह भी है कि उसको बयान किया जाए।”

✦ एक रात वह और इब्ने उयैना सुबह तक बैठे नेअमतों का तज़किरा करते करते रहे!!

✦ आज़ा का शुक्र यह है कि: नेअमतों के ज़रिए अल्लाह अज़ व जल्ल की इताअत पर ही मदद हासिल की जाए और यह कि उन नेअमतों को अल्लाह की किसी भी नाफ़रमानी में इस्तिमाल करने से डरा जाए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “ऐ आले दाऊद! शुक्र अदा करने के लिए अमल करो।”

✦ बाज़ सलफ़ सालेहीन का कहना है: “जब उनसे यह बात कही गई तो उन पर कोई ऐसी घड़ी ना आती थी मगर उनमें कोई ना कोई नमाज़ पढ़ने वाला होता था।”

✦ और इब्ने मुंकदिर एक ऐसे नौजवान के पास से गुज़रे जो एक औरत से मुक़ाबला कर रहा था तो कहने लगे: ऐ मेरे बेटे! अल्लाह ने जो नेअमत तुझ पर की है यह उसका बदला नहीं है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

• فَالْعَجبُ مِمَّنْ يَّعْلَمُ اَنَّ كُلَّ مَا جاءَ بِهِ مِنَ النِّعَمِ مِنَ اللّٰهِ،ثُمَّ لا يَسْتَحْيِیْ مِنَ الْاِسْتِعَانَةِ بِهَا عَلٰی مَا نَهَاهُ!!

• اَخِی الْـمُسْـلِمَ:هَا اَنْتَ قَدْ عَرَفْتَ فَضِیْلَةَ الشُّكْرِ وَحَقِیْقَتَهُ وَاَقْسَامَهُ،فَقُلْ لِّیْ بِرَبِّكَ:

• هَـلْ اَنْتَ مِنَ الشَّـاكِـرِیْـنَ حَقًّا؟هَلْ اَنْـتَ مِنَ الْـمُـحِبِّیْنَ لِلّٰهِ صِدْقًا؟

• هَـلْ اَنْـتَ مِنَ الْخَاضِعِیْنَ لِلّٰهِ شُكْرًا؟هَلْ اَنْتَ مِنَ الْمُعْتَرِفِیْنَ لِلّٰهِ بِالْفَضْلِ وَالنِّعْمَةِ؟

• هَلْ اَنْتَ مِنَ الْمُثْنِیْنَ عَلَی اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ بِهَا؟

• هَلْ ظَهَرَ اَثَرُ الشُّكْرِ عَلٰی قَلْبِكَ؟هَلْ ظَهَرَ اَثَرُ الشُّكْرِ عَلٰی لِسَانِكَ؟هَلْ ظَهَرَ اَثَرُ الشُّكْرِ عَلٰی جَوَارِحِكَ؟هَلْ ظَهَرَ اَثَرُ الشُّكْرِ عَلٰی اَخْلَاقِكَ وَتَعَامُلَاتِكَ؟

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

✦ तो तअज्जुब है उस शख़्स पर जो जानता है कि जो नेअमतें उसे मिली हैं वह अल्लाह ही की तरफ़ से आई हैं फिर भी वह उन्हें ऐसे कामों में इस्तिमाल करने से नहीं शर्माता जिससे अल्लाह ने उसे रोका है।

✦ ऐ मेरे मुस्लमान भाई! अब यक़ीनन तुमने शुक्र की फ़ज़ीलत, उसकी हक़ीक़त और उसकी अक़साम जान ली हैं तो तुम्हारे रब की क़सम! मुझे बताओ:

✦ क्या तुम वाक़ई शुक्र करने वालों में से हो? क्या तुम वाक़ई सिदक़े दिल से अल्लाह से मोहब्बत करने वालों में से हो?

✦ क्या तुम शुक्र अदा करते हुए अल्लाह के सामने झुकने वालों में से हो? क्या तुम अल्लाह के फ़ज़ल और नेअमत का ऐतराफ करने वालों में से हो?

✦ क्या तुम उन नेअमतों पर अल्लाह अज़ व जल्ल की हम्दो सना करने वालों में से हो?

✦ क्या तुम्हारे दिल पर शुक्र का असर ज़ाहिर हुआ है? क्या तुम्हारी ज़बान पर शुक्र का असर ज़ाहिर हुआ है? क्या तुम्हारे आज़ा पर शुक्र का असर ज़ाहिर हुआ है? क्या तुम्हारे अख़्लाक़ और मामलात में शुक्र का असर ज़ाहिर हुआ है?

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

• اَخِی الْمُسْلِمَ الْحَبِیْبَ: لِنَکُنْ اَکْثَرَ صَرَاحَةً فَنَقُوْلُ:

• هَلْ مِنَ الشُّکْرِ عَلٰی نِعْمَةِ الْاِسْلَامِ اَنْ یَّتَشَبَّهَ الْمُسْلِمُ وَالْمُسْلِمَةُ بِغَیْرِ الْمُسْلِمِیْنَ مِنَ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَالضَّالِّیْنَ؟

• هَلْ مِنَ الشُّکْرِ عَلَی النِّعَمِ، مَا تَفْعَلُهُ کَثِیْرٌ مِّنَ النِّسَاءِ الْیَوْمَ مِنَ التَّبَرُّجِ وَاتِّبَاعِ الْمُوْضَّاتِ، وَلَبْسِ الْمَلَابِسِ الْفَاتِنَةِ الَّتِیْ خَرَجْنَ بِهَا عَنْ حُدُوْدِ الشَّرْعِ وَالْحَیَاءِ وَالْحِشْمَةِ وَالْعَفَافِ؟

• هَلْ مِنَ الشُّکْرِ تَضْیِیْعُ کَثِیْرٍ مِّنَ الْمُسْلِمِیْنَ لِلصَّلَوَاتِ، وَتَرْکُهُمُ الْجُمَعَ وَالْجَمَاعَاتِ، وَاتِّبَاعُهُمْ لِلْبِدَعِ وَالضَّلَالَاتِ؟

• هَلْ مِنَ الشُّکْرِ تَهَاوُنُ الْکَثِیْرِیْنَ بِصِیَامِ شَهْرِ رَمَضَانَ، وَتَضْیِیْعُ نَهَارِهِ فِی النَّوْمِ، وَلَیْلِهِ فِی السَّهَرِ اَمَامَ شَاشَاتِ الْتِلْفَازِ، وَلُعَبِ الْبَلُوْتِ وَالنَّرْدِ؟ هَلْ مِنَ الشُّکْرِ تَاْخِیْرُ کَثِیْرٍ مِّنَ الْمُسْلِمِیْنَ لِحَجِّ الْفَرِیْضَةِ مَعَ تَمَامِ قُدْرَتِهِمْ وَاسْتِطَاعَتِهِمْ؟ هَلْ مِنَ الشُّکْرِ مَنْعُ الزَّکَاةِ، وَقَبْضُ الْاَیْدِیْ عَنِ الصَّدَقَاتِ، وَتَرْکُ الْاِنْفَاقِ فِیْ وُجُوْهِ الْبِرِّ وَالْخَیْرِ؟

✦ ऐ मेरे प्यारे मुस्लमान भाई! हमें ज़्यादा वज़ाहत से कहना चाहिए:

✦ क्या यह इस्लाम की नेअमत पर शुक्र अदा करना है कि मुस्लमान मर्द और मुस्लमान औरत उन ग़ैर मुस्लिमों की मुशाबेहत इख़्तियार करें जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और जो गुमराह हैं?

✦ क्या यह नेअमतों की शुक्रगुज़ारी में से है आज-कल जो औरतों की कसरत ज़ेबो-ज़ीनत ज़ाहिर कर रही है और रंग निखारने वाली चीज़ों के पीछे लगी हुई है और फ़ितना अंगेज़ लिबास पहन रही है जिनकी वजह से वह शरीअत, हया, वक़ार और पाक दामनी की हदूद से बाहर निकल रही है?

✦ क्या बहुत से मुस्लमानों का नमाज़ें ज़ाया करना, उनका जुमे और नमाज़े बा-जमाअत का छोड़ना और उनका बिदअतों और गुमराहियों का पेरोकार होना भी शुक्रगुज़ारी में से है?

✦ क्या बहुत से लोगों का माहे रमज़ान के रोज़ों को अहमियत ना देना, उसके दिन को सो कर ज़ाया कर देना, उसकी रात को टेलिविज़न की स्क्रीनों के सामने जाग कर और सनूकर और शतरंज खेल कर ज़ाया करना शुक्रगुज़ारी है? क्या मुस्लमानों की अक्सरियत का फ़रीज़ा-ए-हज को अपनी मुकम्मल क़ुदरत और इस्तिताअत होने के बावजूद मौअक्ख़र करना शुक्रगुज़ारी है? क्या ज़कात अदा ना करना और सदक़ात से अपने हाथ रोक लेना और नेकी और भलाई के कामों में खर्च ना करना शुक्र में आता है?

• هَلُ مِنَ الشُّكُرِ مُحَارَبَةُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ عَنُ طَرِيُقِ التَّعَامُلِ بِالرِّبَا،وَالُعَمَلِ فِیُ مُؤَسَّسَاتِهِ؟هَلُ مِنَ الشُّكُرِ اِهُدَارُ الْاَمُوَالِ الطَّائِلَةِ فِیُ جَلُبِ الدُّخَانِ وَالُمُخَدِّرَاتِ وَالُمُسُكِرَاتِ وَغَيُرِهَامِنَ السُّمُوُمِ الُقَاتِلَةِ ؟

• هَلُ مِنُ شُكُرِ النِّعُمَةِ مَا يَفُعَلُهُ كَثِيُرٌ مِّنُ شَبَابِنَا؛مِنُ اِتُلَافِ لِسَّيَّارَاتِهِمُ بِالتَّفُحِيُطِ،وَالتَّطُعِيُسِ،وَالسُّرُعَةِ الُجُنُونِيَّةِ؟

• هَلُ مِنَ الشُّكُرِ اسُتِخُدَامُ نِعُمَةِ الُهَاتِفِ فِی الُمُعَاكَسَاتِ، وَتَضِيُعُ الْاَوُقَاتِ،وَفِيُمَا يَغُضَبُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ؟

• هَلُ مِنَ الشُّكُرِ مَا يَفُعَلُهُ كَثِيُرٌمِّنَ الْاَغُنِيَاءِ الُيَوُمَ؛مِنُ اِهَانَةِ لِّلنِّعُمَةِ،وَاِلُقَاءِ الْاَطُعِمَةِ فِی الُصَّنَادِيُقِ مَعَ الُقَاذُوُرَاتِ؟

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

✦ क्या सूदी मामला करके अल्लाह अज़ व जल्ल से खुल्लम-खुल्ला जंग करना और सूदी इदारों में काम करना भी शुक्र है? क्या सिगरेट, मख्दर (सुकून देने वाली दवाऐं), नशाआवर अशया और इनके इलावा ज़हर क़ातिल अशया को हासिल करने में भारी सरमाए को ज़ाया करना शुक्रगुज़ारी में आता है?

✦ हमारे बहुत से नौजवान जो गाड़ियों के टायरों से शोर पैदा करके (टायर बरनिंग) और ड्रिफ़्टिंग करके और जुनूनी हद तक तेज़ चला कर अपनी गाड़ियाँ तबाह कर रहे हैं क्या यह नेअमत के शुक्र में से है?

✦ क्या टेलीफोन की नेअमत को मनफ़ी कामों में इस्तिमाल करना, औक़ात को ज़ाया करना और वह काम करना जिनसे अल्लाह अज़ व जल्ल ग़ज़बनाक होता है शुक्र में से है?

✦ बहुत से मालदार आज-कल जो नेअमतों की नाक़द्री कर रहे हैं और खाने-पीने की चीज़ों को कूड़े के डब्बों में फेंक रहे हैं क्या यह भी शुक्रगुज़ारी है?

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَعْرِفَةُ النِّعَمِ

• اَخِی الْمُسْلِمَ: اِنَّ مَعْرِفَةَ النِّعْمَةِ مِنْ اَعْظَمِ اَرْكَانِ الشُّكْرِ، حَيْثُ اِنَّهُ يَسْتَحِيْلُ وُجُوْدُ الشُّكْرِ بِدُوْنِ مَعْرِفَةِ النِّعْمَةِ، وَذَالِکَ لِاَنَّ مَعْرِفَةَ النِّعْمَةِ هِیَ السَّبِيْلُ اِلٰی مَعْرِفَةِ الْمُنْعِمِ، فَاِذَا عَرَفَ الْاِنْسَانُ النِّعْمَةَ تَوَصَّلَ بِمَعْرِفَتِهَا اِلٰی مَعْرِفَةِ الْمُنْعِمِ بِهَا، وَمَتٰی عَرَفَ الْمُنْعِمَ بِهَا اَحَبَّهُ، وَمَحَبَّتُهُ سُبْحَانَهُ تَسْتَلْزِمُ شُكْرَهُ.

• وَلَيْسَتِ النِّعَمُ مَقْصُوْرَةً عَلَی الطَّعَامِ وَالشَّرَابِ فَحَسْبُ، كَمَا يَظُنُّ كَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ، بَلْ هِیَ كَثِيْرَةٌ لَّا تُحْصٰی، فَكُلُّ حَرَكَةٍ مِنَ الْحَرَكَاتِ، وَكُلُّ نَفَسٍ مِّنَ الْاَنْفَاسِ لِلّٰهِ تَعَالٰی فِيْهِ نِعَمٌ لَا يَعْلَمُهَا اِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ.

• قَالَ اَبُو الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ: ’’مَنْ لَّمْ يَعْرِفْ نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِلَّا فِیْ مَطْعَمِهٖ وَمَشْرَبِهٖ، فَقَدْ قَلَّ عِلْمُهُ وَحَضَرَ عَذَابُهُ‘‘.

• وَلِذَالِکَ ذُكِرَ اَنَّ شُكْرَ الْعَامَّةِ: يَكُوْنُ عَلَی الْمَطْعَمِ، وَالْمَشْرَبِ، وَالْمَلْبَسِ، وَقُوَّةِ الْاَبْدَانِ، وَشُكْرَ الْخَاصَّةِ: عَلَی التَّوْحِيْدِ، وَالْاِيْمَانِ، وَقُوَّةِ الْقُلُوْبِ.

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नेअमतों की पहचान

✦ ऐ मेरे मुस्लमान भाई! बेशक नेअमतों को पहचानना शुक्र के अरकान में से सबसे बड़ा रुकन है, क्योंकि नेअमत को पहचाने बग़ैर शुक्र का वजूद महाल है इसकी वजह यह है कि नेअमतों को पहचानना ही मुनइम की पहचान का रास्ता है। जब इंसान नेअमत को पहचान लेता है तो उसकी मारफ़त के ज़रिए से वह मुनइम की पहचान तक पहुँच जाता है। और जब वह नेअमतों के इनाम करने वाले को पहचान जाता है तो उससे मोहब्बत करने लगता है और उस पाक हस्ती की मोहब्बत उसके शुक्र को लाज़िम करती है।

✦ और नेअमतें सिर्फ खाने-पीने तक ही महदूद नहीं हैं जैसा कि बहुत से लोग यह ख़्याल करते हैं, बल्कि यह इतनी ज़्यादा हैं जो शुमार नहीं की जा सकतीं। चुनांचे हरकात में से हर हरकत और साँसो में से हर साँस में अल्लाह तआला की ऐसी नेअमतें हैं जो अल्लाह सुब्हाना के सिवा कोई नहीं जानता।

✦ सय्यदना अबु दरदा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया: “जो खाने और पीने के इलावा अपनी ज़ात पर अल्लाह की किसी और नेअमत को नहीं पहचानता तो दरहक़ीक़त उसका इल्म कम हो गया है और उसके अज़ाब का वक़्त आ गया है।”

✦ इसी वजह से बयान किया जाता है कि आम लोगों का शुक्र खाने-पीने, लिबास और जिस्मों की क़ुव्वत पर होता है जबकि ख़ास लोगों का शुक्र तौहीद, ईमान और दिलों की क़ुव्वत पर होता है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رُؤُوسُ النِّعَمِ

• ذَكَرْنَا اَنَّ نِعَمَ اللّٰهِ تَعَالٰی لَا تُعَدُّ وَلَا تُحْصٰی،وَلٰكِنْ يُمْكِنُ اَنْ نَذْكُرَ رُؤُوسَ تِلْكَ النِّعَمِ:

1.نِعْمَةُ الْاِسْلَامِ وَالْاِيْمَانِ:وَهِىَ وَاللّٰهِ،اَعْظَمُ نِعْمَةٍ اَنْعَمَ اللّٰهُ بِهَا عَلَيْنَا؛حَيْثُ جَعَلَنَا مِنْ اَهْلِ الْاِسْلَامِ وَالتَّوْحِيْدِ،وَلَمْ يَجْعَلْنَا مِنَ الْيَهُوْدِ الَّذِيْنَ سَبُّوا اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ،وَوَصَفُوْهُ بِاَقْبَحِ الصِّفَاتِ وَاَخَسِّهَا،اَوِالنَّصَارٰی الَّذِيْنَ عَبَدُوْا غَيْرَ اللّٰهِ،وَنَسَبُوْا اِلَيْهِ الْوَلَدَ، تَعَالَی اللّٰهُ عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا.

• قَالَ مُجَاهِدٌ فِیْ قَوْلِهٖ تَعَالٰی:﴿وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً﴾[لقمان:20] قَالَ:"هِىَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ".

• وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ:"مَا اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَی الْعِبَادِ نِعْمَةً اَفْضَلُ مِنْ اَنْ عَرَّفَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ".

• وَقَالَ ابْنُ اَبِی الْحَوَارِیِّ:"قُلْتُ لِاَبِیْ مُعَاوِيَةَ:مَا اَعْظَمَ النِّعْمَةِ عَلَيْنَا فِی التَّوْحِيْدِ!!نَسْاَلُ اللّٰهَ اَلَّا يَسْلُبَنَا اِيَّاهُ".

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

बुनियादी नेअमतें

✦ हमने इस बात का ज़िक्र किया है कि बेशक अल्लाह तआला की नेअमतों को ना गिना जा सकता है और ना ही शुमार किया जा सकता है लेकिन मुमकिन है कि हम उन नेअमतों में से बड़ी-बड़ी का तज़किरा करें:

1. इस्लाम और ईमान की नेअमत: अल्लाह की क़सम! यह सबसे बड़ी नेअमत है जो अल्लाह ने हम पर इनाम की है कि उसने हमें अहले इस्लाम और अहले तौहीद में से बनाया और हमें यहूदियों में से नहीं बनाया जिन्होंने अल्लाह अज़ व जल्ल को बुरा-भला कहा और सबसे क़बीह और घटिया तरीन औसाफ़ से उसे मौसूफ़ किया, या हमें इसाई नहीं बनाया जिन्होंने ग़ैर अल्लाह की इबादत की और अल्लाह से औलाद मंसूब की, अल्लाह इससे बहुत बुलन्द व बरतर है जो वह कहते हैं।

✦ मुजाहिद رحمه الله अल्लाह तआला के इस क़ौल के बारे में: “और उसने तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतें पूरी कर दीं” कहते हैं कि इससे मुराद “ला इलाहा इल्लल्लाह” है।

✦ इब्ने उयैना رحمه الله कहते हैं: “अल्लाह ने बन्दों को ला इलाहा इल्लल्लाह की मारफ़त से अफज़ल कोई नेअमत अता नहीं फ़रमाई।”

✦ इब्ने अबी हवारी رحمه الله कहते हैं, मैंने अबु मुआविया से कहा: तौहीद हम पर कितनी अज़ीम नेअमत है!! हम अल्लाह से सवाल करते हैं कि वह हमसे यह नेअमत कभी ना छीने।”

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

2.**نِعۡمَةُ السَّتۡرِ وَالۡاِمۡهَالِ:** وَهِىَ اَيۡضًا مِنۡ اَعۡظَمِ النِّعَمِ؛لِاَنَّ اللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ لَوۡ عَاجَلَنَا بِالۡعُقُوۡبَةِ لَهَلَكۡنَا.

• قَالَ مُقَاتِلٌ فِىۡ قَوۡلِهٖ تَعَالٰى:﴿وَاَسۡبَغَ عَلَيۡكُمۡ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً﴾[لقمان:20]. قَالَ:"اَمَّا الظَّاهِرَةُ فَالۡاِسۡلَامُ،وَاَمَّا الۡبَاطِنَةُ: فَسَتۡرُهٗ عَلَيۡكُمُ الۡمَعَاصِىَ".

• وَقَالَ رَجُلٌ لِاَبِىۡ تَمِيۡمَةَ:"كَيۡفَ اَصۡبَحۡتَ؟"،قَالَ: "اَصۡبَحۡتُ بَيۡنَ نِعۡمَتَيۡنِ،لَا اَدۡرِىۡ اَيَّتُهُمَا اَفۡضَلُ؟ذُنُوۡبٌ سَتَرَهَا اللّٰهُ،فَلَا يَسۡتَطِيۡعُ اَنۡ يُّعَيِّرَنِىۡ بِهَا اَحَدٌ،وَمَوَدَّةٌ قَذَفَهَا اللّٰهُ فِىۡ قُلُوۡبِ الۡعِبَادِ لَا يَبۡلُغُهَا عِلۡمِىۡ".

• وَكَتَبَ بَعۡضُ الۡعُلَمَاءِ اِلٰى اَخٍ لَّهٗ:"اَمَّا بَعۡدُ،فَقَدۡ اَصۡبَحَ بِنَا مِنۡ نِّعَمِ اللّٰهِ مَا لَا نُحۡصِيۡهِ، مَعَ كَثۡرَةِ مَا نَعۡصِيۡهِ،فَمَا نَدۡرِىۡ اَيُّهُمَا نَشۡكُرُ:اَجَمِيۡلٌ مَا يَسۡتُرُ،اَمۡ قَبِيۡحٌ مَا سَتَرَ؟!".

3.**نِعۡمَةُ التَّذۡكِيۡرِ:** قَالَ ابۡنُ الۡقَيِّمِ:"وَمِنۡ دَقِيۡقِ نِعَمِ اللّٰهِ عَلَى الۡعَبۡدِ الَّتِىۡ لَا يَكَادُ يَفۡطِنُ لَهَا،اَنَّهٗ يُغۡلِقُ عَلَيۡهِ بَابَهٗ،فَيُرۡسِلُ اللّٰهُ اِلَيۡهِ مَنۡ يَّطۡرُقُ عَلَيۡهِ الۡبَابَ يَسۡاَلُهٗ شَيۡئًا مِنَ الۡقُوۡتِ؛لِيُعَرِّفَهٗ نِعۡمَتَهٗ عَلَيۡهِ".

2. पर्दापोशी और मोहलत देने की नेअमत: यह भी बहुत बड़ी नेअमतों में से है क्योंकि अगर अल्लाह अज़ व जल्ल हमें जल्दी सज़ा दे दे तो हम तबाह हो जाऐंगे।

✦ मुक़ातिल ने अल्लाह तआला के इस फ़रमान के बारे में फ़रमाया है: "और उसने तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतें पूरी कर दीं।" वह कहते हैं कि ज़ाहिरी नेअमत तो इस्लाम है और बातिनी नेअमत उसका तुम्हारी नाफरमानियों पर पर्दा डालना है।"

✦ और एक आदमी ने अबु तमीमा से पूछा: "आपने सुबह किस हाल में की?" उन्होंने कहा: "मैंने दो नेअमतों में सुबह की, मैं नहीं जानता कि उनमें से अफज़ल कौनसी है? कुछ गुनाह जिन पर अल्लाह ने पर्दा डाल दिया कि कोई भी मुझे उन गुनाहों का ताना देने की इस्तिताअत नहीं रखता और वह मोहब्बत जिसे अल्लाह ने बन्दों के दिलों में डाल दिया जिस तक मेरा इल्म नहीं पहुँच सकता।"

✦ और बाज़ उलमा ने अपने किसी भाई की तरफ लिख भेजा "अम्मा बाद! हम पर अल्लाह की इतनी नेअमतें हो चुकी हैं जिनको हम शुमार नहीं कर सकते बावजूद उन नाफरमानियों के जो हम ब-कसरत कर रहे हैं, नहीं जानते कि उनमें से हम किसका शुक्र अदा करें: क्या वह अच्छा काम जो (ऐबों पर) पर्दा डालता है या वह क़बीह काम जिस पर पर्दा डाल दिया गया है!"

3. याद दिहानी की नेअमत: इब्ने क़य्यिम رحمۃ اللہ कहते हैं: "और बन्दे पर अल्लाह की बारीक नेअमतों में से जिनको वह समझ नहीं पाता यह है कि वह अपने दरवाज़े को (बुख्ल की वजह से) अपने ऊपर बंद कर लेता है तो अल्लाह उसकी तरफ ऐसे आदमी को भेजता है जो उसका दरवाज़ा खटखटाता है, उससे कोई गिज़ा माँगता है ताकि अल्लाह उसको उस पर अपनी नेअमत की पहचान करवाए।"

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

• قَـالَ سَلَامُ بْـنُ اَبِیْ مُطِیْعٍ: ”دَخَلْتُ عَلٰی مَرِیْضٍ اَعُوْدُهُ،فَاِذَا هُـوَ یَـئِـنُّ،فَـقُـلْـتُ لَـهُ: اُذْكُرِ الْمَطْرُوْ حِیْنَ عَلَی الطَّرِیْقِ،اُذْكُرِ الَّـذِیْـنَ لَا مَـاْوٰی لَهُـمْ،وَلَا لَهُـمْ مَنْ یَّخْدِمُهُمْ،قَالَ: ثُمَّ دَخَلْتُ عَـلَیْهِ بَعْدَ ذٰلِكَ،فَسَمِعْتُهُ یَقُوْلُ لِنَفْسِهِ: اُذْكُرِی الْمَطْرُوْ حِیْنَ فِی الطَّرِیْقِ اُذْكُرِیْ مَنْ لَّا مَاْوٰی لَهُ،وَلَا لَهُ مَنْ یَّخْدِمُهُ“.

4. **نِعْمَةُ فَتْحِ بَابِ التَّوْبَةِ:** فَمِنْ نِعَمِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ عَلٰی عِبَادِهِ اَنَّهُ لَـمْ یُغْلِقْ بَابَ التَّوْبَةِ دُوْنَهُمْ،مَهْمَا كَانَتْ ذُنُوْبُهُمْ وَمَعَاصِیْهِمْ، وَفِیْ اَثَرٍ اِلٰهِیٍّ یَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ: اَهْلُ ذِكْرِیْ اَهْلُ مَجَالِسَتِیْ، وَاَهْـلُ شُكْرِیْ اَهْلُ زِیَادَتِیْ،وَاَهْلُ طَاعَتِیْ اَهْلُ كِرَامَتِیْ،وَاَهْلُ مَعْصِیَتِیْ لَا اُقَنِّطُهُمْ مِنْ رَّحْمَتِیْ،اِنْ تَابُوْا اِلَیَّ فَاَنَا حَبِیْبُهُمْ،وَاِنْ لَّـمْ یَتُـوْبُـوْا فَـاَنَـا طَبِیْبُهُـمْ،اَبْتَـلِیْهِـمْ بِـالْمَصَائِبِ لِاُطَهِّرَهُمْ مِنَ الْـمَـعَایِبِ،وَفِی الْحَدِیْثِ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰی فَتَـحَ لِلتَّوْبَةِ بَابًامِنْ قِبَلِ الْمَغْرِبِ،عَرْضُهُ اَرْبَعُوْنَ سَنَةً لَا یُغْلِقُهُ حَتّٰی تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا. [اَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِیُّ،وَقَالَ: حَسَنٌ صَحِیْحٌ]

✦ सलाम बिन अबी मुतीअ कहते हैं: “मैं एक मरीज़ की अयादत के लिए गया तो उस वक़्त वह आहें भर रहा था, मैंने उसको कहा: उन लोगों को याद करो जो रास्तों में पड़े हुए हैं और उनको जिनका कोई ठिकाना नहीं और ना ही उनकी कोई ख़िदमत करने वाला है, कहते हैं कि फिर उसके बाद जब मैं उसके पास गया तो मैंने सुना वह अपने आप से कह रहा था: उन लोगों को याद करो जो रास्तों में पड़े हुए हैं, उनको याद करो जिनका कोई ठिकाना नहीं और ना उनकी कोई ख़िदमत करने वाला है।”

4. तौबा का दरवाज़ा खुला होने की नेअमत: अल्लाह अज़ व जल्ल की अपने बन्दों पर नेअमतों में से एक यह है कि उसने उन पर तौबा का दरवाज़ा बंद नहीं किया, ख़्वाह उनके गुनाह और नाफरमानियाँ कितनी ही क्यों ना हों। हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह अज़ व जल्ल फ़रमाता है: “मेरा ज़िक्र करने वाले मेरे हम-मजलिस हैं, मेरा शुक्र अदा करने वाले मेरी ज़्यादा नेअमतें हासिल करने वाले हैं, मेरी इताअत करने वाले मेरी तरफ़ से इज़्ज़त पाने वाले हैं और मेरी नाफ़रमानी करने वाले अगर मेरी बारगाह में तौबा कर लें तो मैं उन्हें अपनी रहमत से मायूस नहीं करता, मैं उनका हबीब हूँ लेकिन अगर वह तौबा ना करें तो मैं उनका तबीब हूँ, मैं उनको मुसीबतों में गिरफ़्तार करता हूँ ताकि मैं उनको ऐबों से पाक कर दूँ।” नबी से मरवी हदीस में है कि आप ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह तआला ने मग़रिब की जानिब तौबा का एक दरवाज़ा खोल रखा है, जिसकी चौड़ाई चालीस साल की मुसाफ़त है, वह उसको बंद नहीं करेगा जब तक कि सूरज मग़रिब की तरफ़ से तुलूअ ना हो जाए।”

• اِخْوَانِیْ:

• اَیْنَ التَّائِبُوْنَ الْعَائِدُوْنَ؟

• اَیْنَ الرَّاکِعُوْنَ السَّاجِدُوْنَ؟

• اَیْنَ الْحَامِدُوْنَ الشَّاکِرُوْنَ؟

5. **نِعْمَةُ الْاِصْطِفَاءِ:** وَهٰذِهِ النِّعْمَةُ یَشْعُرُ بِهَا اَهْلُ الْاِسْتِقَامَةِ وَالْوَرَعِ وَالْاِقْبَالِ عَلَى اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ دُوْنَ غَیْرِهِمْ،فَاللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ثَبَّتَ هٰؤُلَاءِ عَلٰی دِیْنِهٖ فِیْ زَمَنِ الْفِتَنِ،وَصَرَفَهُمْ اِلٰی طَاعَتِهٖ فِیْ حِیْنٍ اَنَّهٗ صَرَفَ اَكْثَرَ النَّاسِ عَنْهَا،وَحَبَّبَهُمْ فِی الْاِیْمَانِ وَزَیَّنَهٗ فِیْ قُلُوْبِهِمْ،وَكَرَّهَ اِلَیْهِمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْیَانَ،وَهٰذِهٖ مِنْ اَعْظَمِ النِّعَمِ الَّتِیْ یَسْتَحِقُّ عَلَیْهَا سُبْحَانَهٗ تَمَامَ الشُّكْرِ وَغَایَةَ الْحَمْدِ.

• مَرَّ وَهْبُ بْنُ مُنَبِّهٍ وَمَعَهٗ رَجُلٌ عَلٰی رَجُلٍ مُبْتَلٰی؛اَعْمٰی مَجْذُوْمٍ مُقْعَدٍ بِهٖ بَرَصٌ،وَهُوَ یَقُوْلُ:"اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی نِعَمِهٖ" فَقَالَ لَهُ الرَّجُلُ الَّذِیْ كَانَ مَعَ وَهْبٍ:"اَیُّ شَیْءٍ بَقِیَ عَلَیْكَ مِنَ النِّعْمَةِ تَحْمَدُ اللّٰهَ عَلَیْهَا؟!"، وَكَانَ هٰذَا الرَّجُلُ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

✦ ऐ मेरे भाइयो!

✦ कहाँ हैं तौबा करने वाले, पलटने वाले?

✦ कहाँ हैं रुकूअ करने वाले, सजदा करने वाले?

✦ कहाँ हैं हम्द करने वाले, शुक्र करने वाले?

5. चुने जाने की नेअमत: और इस नेअमत को सिर्फ अहले इस्तिक़ामत, अहले तक़वा और अल्लाह अज़ व जल्ल की तरफ रुख़ करने वाले ही समझ सकते हैं और उनके इलावा कोई दूसरा नहीं समझ सकता, पस अल्लाह अज़ व जल्ल ने फितनों के ज़माने में उन लोगों को अपने दीन पर क़ायम रखा, और उनको ऐसे वक़्त में अपनी इताअत की तरफ़ मोड़ लिया जिस वक़्त उसने अक्सर लोगों को अपनी इताअत से फेर दिया, उनके दिलों में ईमान को महबूब और मुज़य्यन कर दिया और उनके लिये कुफ़्र, फ़ुसूक़ और नाफ़रमानी को नापसंदीदा बना दिया, और यह बड़ी अज़ीम नेअमतों में से एक नेअमत है जिस पर अल्लाह सुब्हाना मुकम्मल शुक्र और इन्तिहा दर्जे की हम्द का हक़दार है।

✦ वहब बिन मुनब्बा और उनके हमराह एक शख़्स एक मुसीबतज़दा के पास से गुज़रे। वह शख्स नाबीना,कोढ़ी, अपाहिज और फुलबहरी के मर्ज़ में भी मुब्तिला था, उसके बावजूद वह कह रहा था "अल्लाह की नेअमतों पर उसका शुक्र है", वहब के हमराह शख़्स ने उसको कहा: "अल्लाह की कौनसी नेअमत तेरे पास बाक़ी रह गई है जिस पर तू अल्लाह का शुक्र अदा कर रहा है?" और यह शख़्स ऐसी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِیْ قَرْیَۃٍ تَعْمَلُ بِالْمَعَاصِیْ، فَقَالَ لِلرَّجُلِ: ”اِرْمِ بِبَصَرِکَ اِلٰی اَھْلِ الْمَدِیْنَۃِ، فَانْظُرْ اِلٰی کَثْرَۃِ اَھْلِھَا وَمَا یَعْمَلُوْنَ، اَفَلَا اَحْمَدُ اللّٰہَ اَنَّہُ لَیْسَ فِیْھَا اَحَدٌ یَعْرِفُہُ غَیْرِیْ؟“.

6. نِعْمَۃُ الصِّحَّۃِ وَالْعَافِیَۃِ وَسَلَامَۃِ الْجَوَارِحِ:

• کَانَ اَبُو الدَّرْدَاءِ یَقُوْلُ: ”اَلصِّحَّۃُ الْمُلْکُ“.

• وَحَکٰی سَلْمَانُ الْفَارِسِیُّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ: ”اَنَّ رَجُلًا بُسِطَ لَہُ مِنَ الدُّنْیَا، فَانْتُزِعَ مَا فِیْ یَدَیْہِ حَتّٰی لَمْ یَکُنْ لَہُ اِلَّا حَصِیْرٌ بَالِیَۃٌ، فَجَعَلَ یَحْمَدُ اللّٰہَ تَعَالٰی وَیُثْنِیْ عَلَیْہِ، فَقَالَ لَہُ رَجُلٌ اٰخَرُ قَدْ بُسِطَ لَہُ مِنَ الدُّنْیَا: اَرَاَیْتَکَ اَنْتَ عَلٰی مَا تَحْمَدُ اللّٰہَ؟ فَقَالَ الرَّجُلُ: اَحْمَدُہُ عَلٰی مَا لَوْ اُعْطِیْتُ بِہٖ مَا اُعْطِیَ الْخَلْقَ لَمْ اُعْطِھِمْ اِیَّاہُ، قَالَ: وَمَا ذَاکَ؟ قَالَ: اَرَاَیْتَکَ بَصَرَکَ؟ اَرَاَیْتَکَ لِسَانَکَ؟ اَرَاَیْتَکَ یَدَیْکَ؟ اَرَاَیْتَکَ رِجْلَیْکَ؟“.

• وَجَاءَ رَجُلٌ اِلٰی یُوْنُسَ بْنِ عُبَیْدٍ، یَشْکُوْ ضِیْقَ حَالِہٖ، فَقَالَ لَہُ یُوْنُسُ: ”اَیَسُرُّکَ بِبَصَرِکَ ھٰذَا مِائَۃُ اَلْفِ دِرْھَمٍ؟ قَالَ الرَّجُلُ: لَا، قَالَ: فَبِیَدَیْکَ مِائَۃُ اَلْفٍ؟ قَالَ: لَا، قَالَ فَبِرِجْلَیْکَ مِائَۃُ

बस्ती में रहता था जो (अल्लाह की) नाफ़रमानी के काम करती थी, तो उस (मुसीबतज़दा शख़्स) ने उस शख़्स से कहा: "ज़रा इन शहर वालों की तरफ़ निगाह दौड़ाओ, फिर उनकी कसीर तादाद और जो आमाल वह कर रहे हैं उनको देखो, क्या मैं इस पर अल्लाह की हम्द (व शुक्र) ना करूँ कि मेरे सिवा इस शहर में अल्लाह को कोई भी नहीं पहचानता?"

6. सेहत, आफ़ियत और आज़ा की सलामती की नेअमत:

✦ सय्यदना अबु दरदा رضی اللہ عنہ कहा करते थे कि "तन्दरुस्ती बादशाही है।"

✦ सय्यदना सलमान फ़ारसी رضی اللہ عنہ ने एक हिकायत बयान की कि "एक आदमी के लिए दुनिया फ़राख़ कर दी गई थी फिर जो कुछ उसके पास था वह सब छीन लिया गया हत्ता कि सिर्फ़ एक बोसीदा चटाई बाक़ी रह गई तो वह अल्लाह तआला की हम्दो सना करने लगा, एक दूसरा शख़्स जिसके लिए दुनिया फ़राख़ कर दी गई थी ने उससे कहा: "बताओ तो ज़रा कि तुम किस बात पर अल्लाह की तारीफ़ कर रहे हो?" तो उस आदमी ने कहा: "मैं इस बात पर उसकी हम्द करता हूँ कि अगर मुझे वह दे दिया जाए जो उसने मख़्लूक़ दिया तो मैं वह उनको ना देता।" उसने कहा: "वह क्या है?" उसने कहा: "क्या तुमने अपनी आँख के बारे में ग़ौर किया? क्या तुमने अपनी ज़बान, दोनों हाथों और दोनों पाँवों के बारे में ग़ौर किया?

✦ यूनुस बिन उबैद के पास एक आदमी आया, वह अपनी तंगदस्ती की शिकायत करने लगा, तो यूनुस ने उससे कहा: क्या तुम्हारी इस आँख के बदले एक लाख दिरहम तुम्हें ख़ुश करेंगे? उस आदमी ने कहा: नहीं! उन्होंने कहा: तुम्हारे दोनों हाथों के बदले एक लाख? वह बोला कि नहीं, (यूनुस बिन उबैद ने) कहा: क्या एक लाख के बदले अपने दोनों पाँव दोगे?

اَلْفٍ؟قَالَ: لَا،قَالَ: فَذَكَّرَهُ نِعَمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ،ثُمَّ قَالَ لَهُ: اَرٰى عِنْدَكَ مِئِيْنَ الْاُلُوْفِ وَانْتَ تَشْكُو الْحَاجَةَ!!"۔

7.نِعْمَةُ الْمَالِ: [اَلطَّعَامُ وَالشَّرَابُ وَاللِّبَاسُ]۔

• قَالَ بَكْرٌ الْمُزَنِيُّ: "وَاللّٰهِ مَا اَدْرِیْ اَیُّ النِّعْمَتَيْنِ اَفْضَلُ عَلَیَّ وَعَلَيْكُمْ،اَنِعْمَةُ الْمَسْلَكِ،اَمْ نِعْمَةُ الْمَخْرَجِ اِذَا اَخْرَجَهُ مِنَّا؟"، فَقَالَ الْحَسَنُ: "اِنَّهَا نِعْمَةُ الطَّعَامِ"۔

• وَقَالَتْ عَائِشَةُ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا: "مَا مِنْ عَبْدٍ يَشْرَبُ الْمَاءَ الْقُرَاحَ الصَّافِیَ فَيَدْخُلُ بِغَيْرِ اَذًی،وَيَخْرُجُ بِغَيْرِ اَذًی اِلَّا وَجَبَ عَلَيْهِ الشُّكْرُ"۔

• وَقَالَ بَعْضُ السَّلَفِ فِیْ خُطْبَتِهٖ يَوْمَ عِيْدٍ: "اَصْبَحْتُمْ زَهْرًا، وَاَصْبَحَ النَّاسُ غُبْرًا،وَاَصْبَحَ النَّاسُ يَنْسِجُوْنَ وَاَنْتُمْ تَلْبَسُوْنَ، وَاَصْبَحَ النَّاسُ يُنْتِجُوْنَ وَاَنْتُمْ تَرْكَبُوْنَ،وَاَصْبَحَ النَّاسُ يَزْرَعُوْنَ وَاَنْتُمْ تَاْكُلُوْنَ،فَبَكٰى وَاَبْكَاهُمْ"۔

• وَقَالَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ قُرْطٍ الْاَزْدِیُّ،وَقَدْ رَاٰی عَلَی النَّاسِ اَلْوَانَ الثِّيَابِ فِیْ يَوْمِ الْعِيْدِ: "يَالَهَا مِنْ نِّعْمَةٍ مَا اَعْظَمَهَا،وَمِنْ كِرَامَةٍ مَا اَظْهَرَهَا،وَاِنَّمَا تَثْبُتُ النِّعَمُ بِشُكْرِ الْمُنْعَمِ عَلَيْهِ لِلْمُنْعِمِ"۔

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

उसने कहा: नहीं, तो उन्होंने उसको अल्लाह की वह नेअमतें जो उस पर थीं याद दिलाईं। फिर फ़रमाया: मैं देखता हूँ कि तुम्हारे पास लाखों हैं उसके बावजूद तुम मोहताजी की शिकायत कर रहे हो!!

7. माल की नेअमत (खाना, पीना और लिबास)

✦ बकर मज़नी कहते हैं: "अल्लाह की क़सम! मुझे नहीं मालूम कि कौनसी नेअमत उन दो नेअमतों में से जो मुझ पर और तुम पर हैं बेहतर है? आया (गिज़ा) के दाख़िल होने के रास्ते की नेअमत या बहार निकलने के रास्ते की, जब वह (फ़ुज़ला) हमसे बाहर निकालता है?" तो हसन ने कहा: "यक़ीनन खाने की नेअमत।"

✦ सय्यदा आयशा رضی اللہ عنہا फरमाती हैं: "जो बंदा भी ख़ालिस और साफ़ पानी पिये फिर वह बग़ैर तकलीफ के हलक़ से नीचे उतर जाए और बग़ैर तकलीफ के ख़ारिज हो जाए तो उस पर शुक्र करना वाजिब हो जाता है।"

✦ और बाज़ सलफ़े सालेहीन ने ईद के रोज़ अपने ख़ुत्बे में फ़रमाया: "तुमने अच्छे हाल में सुबह की जबकि कुछ लोगों ने ग़ुब्बार आलूद हाल में, कुछ लोगों ने कपड़े बुनते हुए जबकि तुमने पहनते हुए, कुछ लोगों ने नस्ल हासिल करते हुए सुबह की और तुमने सवारी करते हुए, कुछ लोगों ने ग़ल्ला काश्त करते हुए सुबह की जबकि तुमने खाते हुए फिर वह ख़ुद भी रोए और लोगों को भी रुला दिया।"

✦ और अब्दुल्लाह बिन क़ुर्त अज़्दी ने ईद के दिन लोगों को रंगा-रंग कपड़े पहने देखा तो फ़रमाया: "ऐ यह नेअमत! क्या ही अज़ीम यह नेअमत है, कितनी ही ज़्यादा वाज़ेह और ज़ाहिर है यह इज़्ज़त व करामत! और नेअमतें सिर्फ इस सूरत क़ायम रह सकती हैं कि जब इनाम याफ़्ता मुनइम का शुक्र भी अदा करता हो।"

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَقْسَامُ النِّعَمِ

• قَالَ الْاِمَامُ ابْنُ الْقَيِّمِ: اَلنِّعَمُ ثَلَاثٌ:

1. نِعْمَةٌ حَاصِلَةٌ يَعْلَمُ بِهَا الْعَبْدُ.

2. وَنِعْمَةٌ مُنْتَظَرَةٌ يَرْجُوْهَا.

3. وَنِعْمَةٌ هُوَ فِيْهَا لَا يَشْعُرُ بِهَا.

• فَاِذَا اَرَادَ اللّٰهُ اِتْمَامَ نِعْمَتِهِ عَلٰى عَبْدِهِ عَرَّفَهُ نِعْمَتَهُ الْحَاضِرَةَ، وَاَعْطَاهُ مِنْ شُكْرِهِ قَيْدًا يُقَيِّدُهَا بِهِ حَتّٰى لَا تُشَرِّدَ، فَاِنَّهَا تُشَرِّدُ بِالْمَعْصِيَةِ وَتُقَيَّدُ بِالشُّكْرِ، وَوَفَّقَهُ لِعَمَلٍ يَسْتَجْلِبُ بِهِ النِّعْمَةَ الْمُنْتَظَرَةَ، وَبَصَّرَهُ بِالطُّرُقِ الَّتِىْ تَسُدُّهَا وَتَقْطَعُ طَرِيْقَهَا، وَوَفَّقَهُ لِاِجْتِنَابِهَا، وَاِذَا بِهَا قَدْ وَافَتْ اِلَيْهِ عَلٰى اَتَمِّ الْوُجُوْهِ، وَعَرَّفَهُ النِّعَمَ الَّتِىْ هُوَ فِيْهَا وَلَا يَشْعُرُ بِهَا.

• وَيُحْكٰى اَنَّ اَعْرَابِيًّا دَخَلَ عَلَى الرَّشِيْدِ فَقَالَ: "يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ! ثَبَّتَ اللّٰهُ عَلَيْكَ النِّعَمَ الَّتِىْ اَنْتَ فِيْهَا بِاِدَامَةِ شُكْرِهَا، وَحَقَّقَ لَكَ النِّعَمَ الَّتِىْ تَرْجُوْهَا بِحُسْنِ الظَّنِّ بِهِ وَدَوَامِ طَاعَتِهِ، وَعَرَّفَكَ النِّعَمَ الَّتِىْ اَنْتَ فِيْهَا وَلَا تَعْرِفُهَا لِتَشْكُرَهَا". فَاَعْجَبَ الرَّشِيْدَ كَلَامُهُ، وَقَالَ: "مَا اَحْسَنَ تَقْسِيْمَهُ".

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नेअमतों की अक़साम

✦ इमाम इब्ने क़य्यिम رحمة الله ने फ़रमाया: नेअमतों की तीन अक़साम हैं:

1. हासिलशुदा नेअमत, जिसका बन्दे को इल्म भी होता है।
2. मिलने वाली नेअमत, जिसकी वह उम्मीद रखता है।
3. वह नेअमत जो मौजूद होती है मगर उसका उसे शऊर नहीं होता।

✦ तो जब अल्लाह अपने बन्दे पर अपनी नेअमत को मुकम्मल करना चाहता है तो उसको अपनी मौजूदा नेअमत की पहचान करवा देता है और अपने शुक्र की बेड़ी उसको अता करता है जिससे वह उस नेअमत को क़ैद कर लेता है यहाँ तक कि वह नेअमत भागती नहीं, क्योंकि नेअमत नाफ़रमानी करने पर भाग जाती है और शुक्र करने पर क़ैद कर दी जाती है। वह उसे ऐसे अमल की तौफ़ीक़ दे देता है जिसके ज़रिए वह ऐसी नेअमत को हासिल कर लेता है जिसका उसे इन्तिज़ार होता है। वह उसे ऐसे रास्ते दिखा देता है जो नेअमत को बंद कर देते हैं और उसके (ज़ाइल होने के) रास्ते को काट देते हैं। फिर वह उसको उनसे बच जाने की तौफ़ीक़ दे देता है। अचानक वह देखता है कि वह नेअमत उसे कामिल तरीक़े पर मिल गई है। और वह उसे उन नेअमतों की पहचान भी करवा देता है जो उसको मिली होती हैं लेकिन उसे उनका शऊर नहीं होता।

✦ और हिकायत बयान की जाती है कि एक देहाती (हारुन) रशीद के पास आया और उसने कहा: "ऐ अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह आप पर उन नेअमतों को हमेशा क़ायम व दायम रखे जिनमें आप हैं उनका हमेशा शुक्र अदा करने के ज़रिए से और आपके लिए उन नेअमतों को भी साबित कर दे जिनकी आप अल्लाह से हुसने ज़न और उसकी दायमी इताअत की बिना पर उम्मीद रखते हैं और वह आपको उन नेअमतों की भी पहचान करवा दे जो आपको मयस्सर हैं लेकिन आप उनकी मारफ़त नहीं रखते ताकि आप उनका शुक्र अदा कर सकें।" तो उसके कलाम ने (हारुन) रशीद को बहुत ख़ुश किया और उसने कहा: "इसने उन नेअमतों की क्या ही अच्छी तक़सीम की है।"

اَلْوَسَائِلُ الَّتِیْ تَبْعَثُ عَلٰی شُکْرِ النِّعَمِ وَاسْتِمْرَارِهَا وَزِيَادَتِهَا

• اَخِی الْمُسْلِمَ: هُنَاکَ كَثِيْرٌ مِّنَ الْوَسَائِلِ الَّتِیْ تُعِيْنُ عَلٰی شُکْرِ الْمُنْعِمِ وَاسْتِمْرَارِ النِّعَمِ وَزِيَادَتِهَا نَذْكُرُ مِنْهَا:

1. **تَرْکُ الْمَعَاصِیْ:** قَالَ مُخَلَّدُ بْنُ الْحُسَيْنِ: ''اَلشُّكْرُ تَرْکُ الْمَعَاصِیْ''، وَفِیْ بَعْضِ الْاٰثَارِ الْاِلٰهِيَّةِ: اِبْنَ اٰدَمَ! خَيْرِیْ اِلَيْکَ نَازِلٌ وَشرُّکَ اِلَیَّ صَاعِدٌ اَتَحَبَّبُ اِلَيْکَ بِالنِّعَمِ وَتَتَبَغَّضُ اِلَیَّ بِالْمَعَاصِیْ (موضوع)

2. **اَلْاِعْتِرَافُ لَهُ بِالنِّعْمَةِ**، وَالثَّنَاءُ بِهَا عَلَيْهِ، وَعَدَمُ اسْتِخْدَامِهَا فِیْ شَیْءٍ مِّنْ مَعَاصِيْهِ، وَقَدْ سَبَقَ الْحَدِيْثُ عَنْ ذٰلِکَ.

3. **اَلنَّظَرُ اِلٰی اَهْلِ الْفَاقَةِ وَالْبَلَاءِ:** فَاِنَّ ذٰلِکَ يُوْجِبُ احْتِرَامَ النِّعْمَةِ وَعَدَمَ احْتِقَارِهَا، وَلِذٰلِکَ قَالَ النَّبِیُّ صلی اللہ علیہ وسلم: اِذَا نَظَرَ اَحَدُكُمْ اِلٰی مَنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ فِی الْمَالِ وَالْخَلْقِ، فَلْيَنْظُرْ اِلٰی مَنْ هُوَ اَسْفَلُ مِنْهُ مِمَّنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ. [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ]، وَفِیْ رِوَايَةٍ: اُنْظُرُوْا اِلٰی

वह ज़राए जो नेअमतों के शुक्र, उनको बरक़रार रखने और उनके इज़ाफे पर उभारते हैं

✦ ऐ मेरे मुस्लमान भाई! यहाँ बहुत से ऐसे वसाइल हैं जो मुनइम के शुक्र, नेअमतों के क़ायम रहने और उनमें इज़ाफे पर मदद करते हैं। हम उनमें से चंद एक ज़िक्र करते हैं:

1. गुनाहों को तर्क करना: मुख़ल्लिद बिन हुसैन कहते हैं कि “नाफ़रमानियों को छोड़ देना शुक्र है।” बाज़ अहादीसे क़ुदसी में से है कि: ऐ इब्ने आदम! मेरी भलाई तुझ पर नाज़िल होने वाली है और शिर्क मेरी तरफ चढ़ने वाला है, मैं तेरे यहाँ नेअमतों के ज़रिए महबूब बनता हूँ और तू मेरे यहाँ नाफरमानियों के ज़रिए क़ाबिले नफ़रत बनता है! (यह रिवायत मौज़ू है)

2. उसकी नेअमत का ऐतराफ करना: नेअमत मिलने पर उसकी तारीफ़ करना और उस नेअमत को अल्लाह की नाफ़रमानी में इस्तिमाल ना करना। इस बारे में हदीस गुज़र चुकी है।

3. फ़ाक़ाकश और मुसीबतज़दा लोगों की तरफ देखना: क्योंकि यह चीज़ नेअमत के अहतराम और उसको हक़ीर ना जानने का मूजिब बनती है। इसलिए नबी ने फ़रमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसे आदमी को देखे जो माल व दौलत और शक्ल व सूरत में उससे बढ़कर है तो उसे ऐसे शख़्स को भी देखना चाहिए जो उससे कम दर्जे का है, जिस पर (ख़ुद) उसे फ़ज़ीलत दी गई।” [मुत्तफक़ अलैह] और एक रिवायत में है: “उसकी तरफ़ देखो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَنْ هُوَ اَسْفَلُ مِنْكُمْ،وَلَا تَنْظُرُوْا اِلٰى مَنْ هُوَ فَوْقَكُمْ،فَهُوَ اَجْدَرُ اَلَّا تَزْدَرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ.

• قَالَ النَّوَوِيُّ:"قَالَ ابْنُ جَرِيْرٍ وَغَيْرُهُ:"هٰذَا حَدِيْثٌ جَامِعٌ لِاَنْوَاعٍ مِّنَ الْخَيْرِ،لِاَنَّ الْاِنْسَانَ اِذَا رَاٰى مَنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ فِى الدُّنْيَا طَلَبَتْ نَفْسُهُ مِثْلَ ذٰلِكَ،وَاسْتَصْغَرَ مَا عِنْدَهُ مِنْ نِّعْمَةِ اللّٰهِ تَعَالٰى،وَحَرَصَ عَلَى الْاِزْدِيَادِ لِيَلْحَقَ بِذٰلِكَ اَوْ يُقَارِبُهُ، هٰذَا هُوَ الْمَوْجُوْدُ فِىْ غَالِبِ النَّاسِ،وَاَمَّا اِذَا نَظَرَ فِىْ اُمُوْرِ الدُّنْيَا اِلٰى مَنْ هُوَ دُوْنَهُ فِيْهَا ظَهَرَتْ لَهُ نِعْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ فَشَكَرَهَا، وَتَوَاضَعَ وَفَعَلَ فِيْهِ الْخَيْرَ".

4.مَعْرِفَةُ الْاِنْسَانِ اَنَّهُ بِمَنْزِلَةِ الْعَبْدِ الْمَمْلُوْكِ لِسَيِّدِهِ،وَاَنَّهُ لَا يَمْلِكُ شَيْئًا عَلَى الْاِطْلَاقِ،وَاَنَّ كُلَّ مَا لَدَيْهِ اِنَّمَا هُوَ مَحْضُ عَطَاءٍ مِّنْ سَيِّدِهِ،قَالَ الْحَسَنُ:" قَالَ مُوْسٰى:"يَا رَبِّ! كَيْفَ يَسْتَطِيْعُ اٰدَمُ اَنْ يُّؤَدِّىَ شُكْرَ مَا صَنَعْتَ اِلَيْهِ؟خَلَقْتَهُ بِيَدِكَ، وَنَفَخْتَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِكَ،وَاَسْكَنْتَهُ جَنَّتَكَ،وَاَمَرْتَ الْمَلَائِكَةَ فَسَجَدُوْا لَهُ"،فَقَالَ:"يَامُوْسٰى!عَلِمَ اَنَّ ذٰلِكَ مِنِّىْ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

जो तुमसे कमतर है और उसकी तरफ़ ना देखो जो तुमसे बरतर है क्योंकि यह ज़्यादा लायक़ है कि उससे तुम अपने ऊपर अल्लाह की नेअमत को हक़ीर नहीं जानोगे।"

✦ और नूवी ने कहा: इब्ने जरीर और उनके इलावा दूसरे भी कहते हैं कि "यह हदीस ख़बर की बहुत सी अक़साम को जमा करने वाली है क्योंकि जब इंसान ऐसे शख़्स को देखता है जो दुनिया में उस पर बरतरी दिया गया है तो उसका नफ़्स भी ऐसी ही चीज़ की ख़्वाहिश करता है और अल्लाह तआला की जो नेअमत उस पर उसको हासिल होती है वह उसे हक़ीर समझता है और वह ज़्यादा की हिर्स करता है ताकि वह उसके ज़रिए उस शख़्स के बराबर या उसके क़रीब हो जाए। लोगों की अक्सरियत में यह रुहजान मौजूद है मगर जब वह दुनिया के मामलात में उस शख़्स को देखता है जो उससे कमतर है तो अल्लाह की जो नेअमत उस पर है वह वाज़ेह हो जाती है फिर वह उसका शुक्र अदा करता है, तवाज़ेअ इख़्तियार करता है और उसमें भलाई का काम करता है।"

4. इंसान का यह जानना कि उसका मरतबा अपने आक़ा के सामने ज़रख़रीद गुलाम की मानिंद है और वह किसी भी चीज़ का मुतलक़न मालिक नहीं है और जो कुछ उसके पास है वह सबका सब उसके मालिक का दिया हुआ है। हसन (बसरी) कहते हैं कि मूसा عليه ने फ़रमाया: "ऐ मेरे रब! जो ईनाम तूने आदम पर किए वह उनका शुक्र किस तरह अदा कर सकता है? तूने उसको अपने हाथ से बनाया और उसमें अपनी रूह में से फूँका और अपनी जन्नत में उसे बसाया और फ़रिश्तों को हुक्म दिया तो उन्होंने उसको सजदा किया।" तो अल्लाह ने फ़रमाया: "ऐ मूसा! उसने जान लिया था कि यह सब (नेअमतें) मेरी तरफ़ से हैं।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَحَمِدَنِیْ عَلَیْهِ،فَکَانَ ذٰلِکَ شُکْرَ مَا صَنَعْتُ اِلَیْهِ!''.(حدیث مقطوع)

• وَلِذٰلِکَ ثَبَتَ فِی الصَّحِیْحَیْنِ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَامَ حَتّٰی تَفَطَّرَتْ قَدَمَاهُ،فَقِیْلَ لَهُ:''اَتَفْعَلُ هٰذَا وَقَدْ غَفَرَ اللّٰهُ لَکَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِکَ وَمَا تَاَخَّرَ؟!''فَقَالَ عَلَیْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ: اَفَلَا اَکُوْنُ عَبْدًا شَکُوْرًا،اَیْ اَنَّ کُلَّ مَا فَعَلَهُ اللّٰهُ تَعَالٰی بِیْ مِنَ الْاِصْطِفَاءِ وَالْهِدَایَةِ وَالْمَغْفِرَةِ هُوَ مَحْضُ عَطَاءٍ مِّنْهُ سُبْحَانَهُ، یَسْتَحِقُّ عَلَیْهِ الْحَمْدَ وَالشُّکْرَ،فَمَا اَنَا اِلَّا عَبْدٌ لَّهُ سُبْحَانَهُ.

5.اَلْاِنْتِفَاعُ بِالنِّعَمِ وَعَدَمُ کَنْزِهَا:فَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَیْبٍ،عَنْ اَبِیْهِ،عَنْ جَدِّهِ،اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ:کُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَتَصَدَّقُوْا مِنْ غَیْرِ مَخِیْلَةٍ وَلَا سَرَفٍ،فَاِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ اَنْ یَرٰی اَثَرَ نِعْمَتِهِ عَلٰی عَبْدِهِ.[اَحْمَدُ وَالنَّسَائِیُّ وَالتِّرْمِذِیُّ وَصَحَّحَهُ الْحَاکِمُ]

6.اَلصَّدَقَةُ وَالْبَذْلُ وَالْعَطَاءُ:فَاِنَّ ذٰلِکَ مِنْ عَلَامَاتِ شُکْرِ النِّعَمِ،وَلِذٰلِکَ رُوِیَ اَنَّ دَاوٗدَ عَلَیْهِ السَّلَامُ کَانَ یَقُوْلُ فِیْ دُعَائِهِ:''سُبْحَانَ مُسْتَخْرِجِ الشُّکْرِ بِالْعَطَاءِ''.

• وَدُعِیَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اِلٰی قَوْمٍ عَلٰی رِیْبَةٍ،

फिर इस पर मेरी तारीफ़ की, तो यही उसका शुक्र था जो मैंने उस पर अहसान किए।"

✦ यही वजह है कि सहीहैन में साबित है कि नबी इतना लम्बा क़याम करते कि आप के दोनों पाँव फट जाते। आप से पूछा गया कि आप इतनी मशक्क़त उठाते हैं हालाँकि अल्लाह ने आप के अगले-पिछले गुनाह माफ़ कर दिए हैं? तो आप अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया: "क्या मैं शुक्रगुज़ार बंदा ना बनूँ?" यानि अल्लाह तआला ने मुझे मुंतख़िब करके, हिदायत देकर और मग़फ़िरत करके जो एहसान मुझ पर किया है वह महज़ अल्लाह की अता है जिस पर वह तारीफ़ और शुक्र का मुस्तहिक़ है। मैं तो अल्लाह सुब्हाना का महज़ एक बंदा हूँ।

5. नेअमतों से फ़ायदा उठाना और उनको ज़खीरा ना करना: अम्र बिन शोएब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि नबी ने फ़रमाया: "खाओ, पियो और सदक़ा करो बग़ैर तकब्बुर और फ़ुज़ूल ख़र्ची के क्योंकि अल्लाह पसंद करता है कि उसकी नेअमत का असर उसके बन्दे पर नज़र आए।"

6. सदक़ा करना, खर्च करना और अता करना: क्योंकि यह सब नेअमतों के शुक्र की अलामात में से है और इसी लिए रिवायत किया गया है कि दाऊद عليه अपनी दुआ में फ़रमाया करते थे: "पाक है वह ज़ात ऐ शुक्र को अता के साथ निकालने वाले।"

✦ सय्यदना उस्मान बिन अफ़्फ़ान رضـــى الله عنہ को ऐसे लोगों की तरफ़ बुलाया गया जो किसी गुनाह पर थे,

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَانطَلَقَ لِيَاْخُذَهُمْ،فَتَفَرَّقُوْا قَبْلَ اَنْ يَّبْلُغَهُمْ،فَاَعْتَقَ رَقَبَةً شُكْرًا لِلّٰهِ،اَلَّا يَكُوْنَ جَرٰى عَلٰى يَدَيْهِ خِزْىُ مُسْلِمٍ!!.

7.ذِكْرُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ: فَالشُّكْرُ فِىْ حَقِيْقَتِهٖ هُوَ ذِكْرُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ،وَوَرَدَ عَنْ مُجَاهِدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ فِىْ قَوْلِهٖ تَعَالٰى: ﴿اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا﴾ [الاسراء:3] قَالَ:''لَمْ يَاْكُلْ شَيْئًا اِلَّا حَمِدَ اللّٰهَ عَلَيْهِ،وَلَمْ يَشْرَبْ شَرَابًا اِلَّا حَمِدَ اللّٰهَ عَلَيْهِ،وَلَمْ يَبْطِشْ بِشَىْءٍ قَطُّ اِلَّا حَمِدَ اللّٰهَ عَلَيْهِ،فَاَثْنَى اللّٰهُ عَلَيْهِ اَنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا''،وَقَالَ النَّبِىُّ ﷺ:اِنَّ اللّٰهَ لَيَرْضٰى عَنِ الْعَبْدِ اَنْ يَّاْكُلَ الْاَكْلَةَ فَيَحْمَدُهٗ عَلَيْهَا،اَوْ يَشْرَبُ الشَّرْبَةَ فَيَحْمَدُهٗ عَلَيْهَا [مسلم]

8.اَلتَّوَاضُعُ وَتَرْكُ الْكِبْرِ: فَالْكِبْرُ يُضَادُّ الشُّكْرَ،لِاَنَّ حَقِيْقَةَ الْكِبْرِ،هُوَ ظَنُّ الْعَبْدِ اَنَّهُ الْمَالِكُ الْمُتَصَرِّفُ،وَالشُّكْرُ هُوَ الْاِعْتِرَافُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ بِذٰلِكَ.

9.شُهُوْدُ مَشْهَدِ التَّقْصِيْرِ فِى الشُّكْرِ: وَذٰلِكَ بِاَنْ يَّعْرِفَ الْعَبْدُ اَنَّهٗ مَهْمَا بَالَغَ فِى الشُّكْرِ،فَاِنَّهٗ لَنْ يُّوْفِىَ حَقَّ نِعْمَةٍ وَّاحِدَةٍ مِّنْ نِّعَمِ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ،بَلْ اِنَّ الشُّكْرَ نَفْسَهٗ نِعْمَةٌ تَحْتَاجُ اِلٰى

चुनांचे आप उनकी गिरफ़्त करने गए तो उनके पहुँचने से पहले ही वह लोग तितर-बितर हो गए। चुनांचे उन्होंने अल्लाह के शुक्राने के तौर पर एक गुलाम आज़ाद किया कि उनके हाथों किसी मुस्लमान की रुसवाई नहीं हुई!

7. अल्लाह अज़ व जल्ल का ज़िक्र करना: अल्लाह अज़ व जल्ल का ज़िक्र करना ही हक़ीक़त में शुक्र है। और मुजाहिद رضی اللہ عنہ से अल्लाह तआला के फ़रमान "बिलाशुबा वह (नूह) एक शुक्रगुज़ार बंदा था" के बारे में मरवी है। वह कहते हैं कि "वह जो कुछ भी खाते उस पर अल्लाह की हम्द करते, जो कुछ भी पीते उस पर अल्लाह की हम्द करते और जब भी कोई चीज़ पकड़ते तो उस पर अल्लाह की हम्द करते तो अल्लाह ने उनकी तारीफ़ करते हुए फ़रमाया कि वह एक शुक्रगुज़ार बन्दा था।" नबी ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह उस बन्दे से ज़रूर राज़ी होता है जो एक लुक़मा खाए फिर उस पर उसकी हम्द करे या एक घूँट मशरूब पिये फिर उस पर उसकी हम्द करे।"

8. इंकसारी इख़्तियार करना और तकब्बुर छोड़ देना: पस तकब्बुर शुक्र के मनाफ़ी है, क्योंकि तकब्बुर की हक़ीक़त बन्दे का यह गुमान करना है कि वह मालिक है और अपनी मर्ज़ी से तसर्रुफ़ करने वाला है जबकि शुक्र अल्लाह अज़ व जल्ल के लिए इसी बात का ऐतराफ़ करना है।

9. शुक्र में कमी कोताही के मक़ाम को पेशे नज़र रखना: यह कि बन्दा जान ले कि वह शुक्र में जितना मुबालग़ा भी कर ले फिर भी वह अपने ऊपर अल्लाह तआला की नेअमतों में से किसी एक नेअमत का भी सही हक़ अदा नहीं कर सकता बल्कि शुक्र अदा करना भी एक नेअमत है जो ख़ुद शुक्र की मोहताज है।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

شُكُرٍ،وَلِذٰلِكَ قِيلَ:اِنْ كَانَ شُكْرِیْ نِعْمَةَ اللّٰهِ نِعْمَةً عَلَیَّ لَهُ فِیْ مِثْلِهَا يَجِبُ الشُّكُرُ فَكَيْفَ وُقُوْعُ الشُّكْرِ اِلَّا بِفَضْلِهِ وَاِنْ طَالَتِ الْاَيَّامُ وَاتَّصَلَ الْعُمُرُ.

10. **مُجَاهَدَةُ الشَّيْطَانِ وَالْاِسْتِعَاذَةُ بِاللّٰهِ مِنْهُ:** قَالَ ابْنُ الْقَيِّمِ: ”وَلَمَّا عَرَفَ عَدُوُّ اللّٰهِ اِبْلِيْسُ قَدْرَ مَقَامِ الشُّكْرِ،وَاَنَّهُ مِنْ اَجَلِّ الْمَقَامَاتِ وَاَعْلَاهَا،جَعَلَ غَايَتَهُ اَنْ يَّسْعَ فِیْ قَطْعِ النَّاسِ عَنْهُ، فَقَالَ:﴿ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ﴾[الاعراف:17].

11. **تَرْكُ مُخَالَطَةِ اَهْلِ الْغَفْلَةِ:** فَاِنَّ مُخَالَطَتَهُمْ تُنْسِی الشُّكْرَ، وَتَقْطَعُ الْعَبْدَ عَنِ التَّفَكُّرِ فِی النِّعَمِ.

• قِيلَ لِلْحَسَنِ: ”هَاهُنَا رَجُلٌ لَا يُجَالِسُ النَّاسَ“،فَجَاءَ اِلَيْهِ فَسَاَلَهُ عَنْ ذٰلِكَ،فَقَالَ: ”اِنِّیْ اُمْسِیْ وَاُصْبِحُ بَيْنَ ذَنْبٍ وَّنِعْمَةٍ، فَرَاَيْتُ اَنْ اَشْغَلَ نَفْسِیْ عَنِ النَّاسِ بِالْاِسْتِغْفَارِ مِنَ الذَّنْبِ، وَالشُّكْرِ لِلّٰهِ عَلَی النِّعْمَةِ“،قَالَ لَهُ الْحَسَنُ: ”اَنْتَ عِنْدِیْ يَاعَبْدَ اللّٰهِ اَفْقَهُ مِنَ الْحَسَنِ!!!“.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

इसी वजह से कहा गया है: अगर अल्लाह की नेअमत पर मेरा शुक्र करना भी नेअमत है तो इस जैसी नेअमत पर भी शुक्र वाजिब है तो उसके फज़्ल के बग़ैर कैसे शुक्र अदा हो सकता है अगरचे दिन तवील हो जाऐं और उम्र भी लम्बी हो जाए।

10. शैतान से जिहाद करना और उसके शर से अल्लाह की पनाह माँगना: इब्ने क़य्यिम कहते हैं: "जब अल्लाह के दुश्मन इब्लीस ने शुक्र के मक़ाम की क़द्र पहचान ली और यह कि यह बहुत अज़ीम और बुलन्द मक़ामात में से है तो उसने अपना मक़सद यह बना लिया कि लोगों को इससे काटने की कोशिश करे। चुनांचे उसने कहा: "फिर मैं ज़रूर उनके आगे से और उनके पीछे से और उनकी दाऐं अतराफ़ से और उनकी बाऐं अतराफ़ से आऊँगा और तू उनकी अक्सरियत को शुक्र करने वाला ना पाएगा।"

11. अहले गफ़लत से मेल-मिलाप तर्क करना: क्योंकि उनसे मेल-मिलाप करना शुक्र को भुला देता है और बन्दे को नेअमतों पर गौरो-फ़िक्र करने से रोक देता है।

✦ हसन बसरी رحمة الله से कहा गया: "यहाँ एक आदमी है जो लोगों से मेल-मिलाप नहीं रखता" तो वह उसके पास आए और उससे इस बारे में पूछा, तो उसने कहा: "बेशक मैं गुनाह और नेअमत के दर्मियान सुबह व शाम करता हूँ। मैंने सोचा कि मैं लोगों से दूर रह कर गुनाहों पर इस्तिग़फार करने और नेअमतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करने में अपने आप को मशगूल कर लूँ।" हसन बसरी رحمة الله ने उससे कहा: "ऐ अल्लाह के बन्दे! मेरे नज़दीक तुम हसन से ज़्यादा समझदार हो!!!"

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

12. اَلدُّعَاءُ: بِاَنْ يَّجْعَلَكَ اللّٰهُ تَعَالٰى مِنَ الشَّاكِرِيْنَ، وَاَنْ يُوَفِّقَكَ لِطَرِيْقِ الشُّكْرِ وَمَنْزِلَتِهِ الْعَالِيَةِ، وَلِذٰلِكَ ثَبَتَ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِمُعَاذٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ: وَاللّٰهِ اِنِّيْ لَاُحِبُّكَ، فَلَا تَنْسَ اَنْ تَقُوْلَ دُبُرَ كُلِّ صَلَاةٍ: اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ [اَحْمَدُ وَاَبُوْ دَاؤُدُ وَالنَّسَائِيُّ وَهُوَ صَحِيْحٌ] .

وَصَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلٰى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ، وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

12. दुआ करना: कि अल्लाह तआला आपको शुक्रगुज़ारों में से बना दे और यह कि आपको शुक्र के रास्ते पर चलने और उसकी बुलन्द मंज़िल तक पहुँचने की तौफ़ीक़ दे। यही वजह है कि हदीस से साबित है कि नबी ने माज़ رضی اللہ عنہ से फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! यक़ीनन मैं तुमसे मोहब्बत करता हूँ, पस तुम हर नमाज़ के बाद यह कहना ना भूलना: ऐ अल्लाह! अपना ज़िक्र करने, अपना शुक्र करने और बेहतरीन (अंदाज़ में) अपनी इबादत करने में मेरी मदद फ़रमा।

और अल्लाह हमारे नबी मोहम्मद , उनकी आल और उनके साथियों पर रहमत, सलामती और बरकत फ़रमाए।

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمَصَادِرُ

*عِدَةُ الصَّابِرِيْنَ لِابْنِ الْقَيِّمِ.

*مَدَارِجُ السَّالِكِيْنَ لِابْنِ الْقَيِّمِ.

*الْفَوَائِدُ لِابْنِ الْقَيِّم.

*شَرْحُ حَدِيْثِ شَدَّادِ بْنِ اَوْسٍ لِابْنِ رَجَبٍ.

*شَرْحُ صَحِيْحِ مُسْلِمٍ لِلنَّوَوِيِّ.

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

1.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. (الفاتحة:1)

“सब तारीफ अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है।”

2.لِرَبِّىَ الْحَمْدُ. (سنن أبی داؤد:874)

“मेरे रब के लिए ही तमाम तारीफ़ है।”

3.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا. (سلسلة الصحيحة، ج:7، 3452)

“सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, बहुत ज़्यादा।”

4.سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ. (صحيح مسلم:6842)

“पाक है अल्लाह अपनी तारीफ़ के साथ।”

5.سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ. (سنن أبی داؤد:5093)

“पाक है अल्लाह, अज़मत वाला, अपनी तारीफ़ के साथ।”

6.مَاشَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. (الكهف:39)

“जो अल्लाह ने चाहा, कुछ क़ुव्वत नहीं मगर अल्लाह की मदद से।”

7.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ. (سنن ابن ماجة:3803)

“हर हाल में अल्लाह की तारीफ़ है।”

8.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ. (سنن ابن ماجة:3803)

“सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसके फ़ज़्ल व इनाम से नेक काम अंजाम पाते हैं।”

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

9.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ. (صحیح مسلم :1357)

“सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है। बहुत ज़्यादा, पाकीज़ा और बा-बरकत तारीफ़”

10.اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهُ،وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ الْاَمْرُ كُلُّهُ.

(صحیح الترغیب و الترهیب، ج:2،1576)

“ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए सब तारीफ़ है और तेरी ही तरफ़ सब काम लौटते हैं।”

11.سُبْحَانَ رَبِّىْ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ رَبِّىْ وَبِحَمْدِهٖ

(سنن الترمذی:3593)

“पाक है मेरा रब! और उसी के लिए सब तारीफ़ है, पाक है मेरा रब! और उसी के लिए सब तारीफ़ है।”

12.سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ .

(صحیح مسلم :6847)

“पाक है अल्लाह और सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है।”

13.اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا،وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا،وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا. (صحیح مسلم:1358)

“अल्लाह सबसे बड़ा है बहुत बड़ा, सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है बहुत ज़्यादा और (मैं) सुबह व शाम अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ)।”

14.اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ مِلْءُ السَّمَاءِ وَمِلْءُ الْاَرْضِ وَمِلْءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ. (صحیح مسلم:1069)

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये हर क़िस्म की तारीफ है जिससे कि आसमान भर जायें और ज़मीन भर जाये और इनके बाद जो तू चाहे भर जाये।”

15.لَا اِلٰـهَ اِلَّا الـلّٰـهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. (مسند احمد، ج:11، 6973)

“अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह पाक है, सब तारीफ अल्लाह ही के लिए है और (बुराई से बचने की) ताक़त और (नेकी करने की) क़ुव्वत अल्लाह (की तौफ़ीक़) के बग़ैर नहीं।”

16.اَلْـحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْـدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ مُبَارَكًا عَلَيْهِ كَمَا يُحِبُّ رَبُّنَا وَيَرْضٰى. (سنن أبی داؤد:773)

“सब तारीफ अल्लाह के लिए है। बहुत ज़्यादा, पाकीज़ा और बहुत बा-बरकत तारीफ़ जिस तरह हमारा रब पसंद करता है और वह राज़ी होता है।”

17.سُبْحَانَكَ الـلّٰهُمَّ وَبِـحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ. (سلسلة الصحيحة، ج:6، 2598)

“पाक है तू ऐ अल्लाह! और तेरी ही तारीफ़ है और तेरा नाम बड़ा ही बरकत वाला है और तेरी बुज़ुर्गी बुलन्द व बरतर है और तेरे इलावा कोई इलाह नहीं।”

18.سُبْـحَـانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ. (صحيح مسلم:6913)

“पाक है अल्लाह और उसी की तारीफ़ है उसकी मख़्लूक़ की तादाद के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

बराबर, उसकी ज़ात की रज़ा के बराबर, उसके अर्श के वज़न और उसके कलिमात की स्याही के बराबर।"

19.سُبْحَانَ اللّٰهِ لَا شَرِيْكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ. (الادب المفرد:638)

"अल्लाह पाक है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, उसकी के लिए तमाम तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर है। (बुराई से बचने की) ताक़त और (नेकी करने की) क़ुव्वत अल्लाह (की तौफीक़) के बग़ैर नहीं, अल्लाह पाक है और उसी की तारीफ़ है।"

20.لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ،اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَسُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ،لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ. (صحيح مسلم:6848)

"अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। अल्लाह सबसे बड़ा है बहुत बड़ा और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है बहुत ज़्यादा और पाक है अल्लाह जो तमाम जहानों का रब है। (बुराई से बचने की) ताक़त और (नेकी करने की) क़ुव्वत अल्लाह (की तौफ़ीक़) के बग़ैर नहीं जो बहुत ज़बरदस्त, बहुत हिकमत वाला है।"

21.اَللّٰهُمَّ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ. (صحيح مسلم:1090)

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“ऐ अल्लाह! मैं तेरी नाराज़गी से तेरी रज़ामंदी की और तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी की पनाह में आता हूँ। मैं तुझसे (डर कर) तेरी ही पनाह में आता हूँ। मैं तेरी तारीफ़ करने की ताक़त नहीं रखता, तू वैसा ही है जैसे कि तूने ख़ुद अपनी सना बयान की है।”

22. اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمٰوَاتِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَیْءٍ بَعْدُ اَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَیْتَ وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا یَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْکَ الْجَدُّ. (صحیح مسلم:1058)

“ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है जिससे की आसमान भर जाऐं और ज़मीन भर जाए इसके बाद हर वह चीज़ जिसे तू चाहे कि वह भर जाए। (तू) तारीफ़ और बुज़ुर्गी के लायक़ है, तू जो अता फरमाए उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले उसे कोई अता करने वाला नहीं और किसी साहिबे हैसियत को उसकी हैसियत तेरे यहाँ कोई फ़ायदा नहीं दे सकती।”

23. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ مَا خَلَقَ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا فِی الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ مَا فِی السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ مَا خَلَقَ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا اَحْصٰی کِتَابُهٗ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ کُلِّ شَیْءٍ. (سلسلة الصحيحة، ج:6، 2578)

“सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है उसकी मख़्लूक़ की गिनती के बराबर, सब

तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिससे उसकी मख़्लूक़ात भर जाऐं, सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है उन चीज़ों की गिनती के बराबर जो ज़मीन व आसमान में हैं, सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिससे वह चीज़ें भर जाऐं जो आसमान व ज़मीन में हैं। सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिससे उसकी मख़्लूक़ात भर जाऐं। सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है उन चीज़ों की गिनती के बराबर जिनको उसने अपनी किताब में शुमार किया और सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिससे हर चीज़ भर जाए।"

24.اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَیِّمُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ لَکَ مُلْکُ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِکُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُکَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُکَ حَقٌّ وَقَوْلُکَ حَقٌّ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ وَالنَّبِیُّوْنَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ حَقٌّ.

(صحیح البخاری:1120)

"ऐ अल्लाह! हर तरह की तारीफ़ तेरे ही लिए है, तू आसमानों और ज़मीन और इनमें रहने वाली तमाम मख़्लूक़ का सँभालने वाला है। तेरे ही लिए तारीफ़ है, आसमानों और ज़मीन और इनके दर्मियान की तमाम चीज़ों पर हुकूमत तेरे ही लिए है। तेरे ही लिए तारीफ़ है, तू आसमानों और ज़मीन का नूर है। तेरे ही लिए तारीफ़ है, तू आसमानों और ज़मीन का बादशाह है। तेरी ही तारीफ़ है, तू सच्चा है, तेरा वादा सच्चा है, तेरी मुलाक़ात बरहक़ है, तेरी बात सच्ची है, जन्नत बरहक़ है, दोज़ख़ बरहक़ है, तमाम नबी सच्चे हैं, मोहम्मद

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

صلى الله عليه وسلم सच्चे हैं और क़यामत बरहक़ है।”

नेअमतों पर शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ माँगना

25. رَبِّ اَوْزِعْنِیْٓ اَنْ اَشْکُرَ نِعْمَتَکَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ
وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَاَدْخِلْنِیْ
بِرَحْمَتِکَ فِیْ عِبَادِکَ الصّٰلِحِیْنَ. (النمل:19)

“ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेअमत का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर ईनाम की है और यह कि मैं वह नेक अमल करूँ जिसे तू पसंद करे और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दों में दाख़िल फ़रमा।”

26. رَبِّ اَوْزِعْنِیْٓ اَنْ اَشْکُرَ نِعْمَتَکَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ
وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صٰلِحًا تَرْضٰهُ وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ
ذُرِّیَّتِیْ اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْکَ وَاِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ O (الاحقاف:15)

“ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेअमत का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर ईनाम की है और यह कि मैं वह नेक अमल करूँ जिसे तू पसंद करे और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह फ़रमा दे, बेशक मैंने तेरी तरफ़ तौबा की और बेशक मैं फ़रमाबरदारों में से हूँ।”

27. اَللّٰهُمَّ اَعِنَّا عَلٰی شُکْرِکَ وَذِکْرِکَ وَحُسْنِ
عِبَادَتِکَ. (مسند احمد، ج:13، 7982)

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

29.اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسْاَلُکَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ وَالْعَزِیْمَةَ عَلَی الرُّشْدِ،وَاَسْاَلُکَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِکَ،وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِکَ وَاَسْاَلُکَ شُکْرَ نِعْمَتِکَ وَحُسْنَ عِبَادَتِکَ وَاَسْاَلُکَ قَلْبًا سَلِیْمًا وَلِسَانًا صَادِقًا وَاَسْاَلُکَ مِنْ خَیْرِ مَا تَعْلَمُ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّمَا تَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُکَ لِمَا تَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ. (سلسلة الصحيحة، ج:7،3228)

"ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे दीन में साबित क़दमी और हिदायत में पुख़्तगी का सवाल करता हूँ, मैं तुझसे तेरी रहमत को वाजिब करने वाले और तेरी मग़फ़िरत को लाज़िम करने वाले उमूर का सवाल करता हूँ, मैं तुझसे तेरी नेअमतों का शुक्र अदा करने और अच्छे अंदाज़ में इबादत करने का सवाल करता हूँ, मैं तुझसे सलामत दिल और सच्ची ज़ुबान का सवाल करता हूँ, मैं तुझसे हर उस भलाई का सवाल करता हूँ जिसे तू जानता है और हर उस बुराई से तेरी पनाह में आता हूँ जिसे तू जानता है और तुझसे उन (तमाम गुनाहों) की बख़्शिश का सवाल करता हूँ जिसे तू जानता है, बेशक तू ग़ैबों को ख़ूब जानने वाला है।"

नेअमतों की तारीफ करने और उनको बयान करने का सवाल करना

30.رَبَّنَا اَصْلِحْ بَیْنِنَا،وَاھْدِنَا سُبُلَ الْاِسْلَامِ،وَنَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَی النُّوْرِ،وَاصْرِفْ عَنَّا الْفَوَاحِشَ مَا ظَھَرَ مِنْھَا وَمَا بَطَنَ،وَبَارِکْ لَنَا فِیۡ اَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُلُوْبِنَا

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

“ऐ अल्लाह! अपना शुक्र करने, अपना ज़िक्र करने और बेहतरीन अंदाज़ में अपनी इबादत करने में हमारी मदद फ़रमा।”

नेअमतों का शुक्रगुज़ार बनने की दुआ करना

28.رَبِّ اَعِنِّیُ وَلَا تُعِنُ عَلَیَّ،وَانُصُرُنِیُ وَلَا تَنُصُرُ عَلَیَّ،
وَامُکُرُ لِیُ وَلَا تَمُکُرُ عَلَیَّ،وَاهُدِنِیُ وَیَسِّرُ هُدَایَ اِلَیَّ،
وَانُصُرُنِیُ عَلٰی مَنُ بَغٰی عَلَیَّ،اَللّٰهُمَّ اجُعَلُنِیُ لَکَ
شَاکِرًا،لَکَ ذَاکِرًا،لَکَ رَاهِبًا،لَکَ مِطُوَاعًا اِلَیُکَ
مُخُبِتًا،رَبِّ تَقَبَّلُ تَوُبَتِیُ وَاغُسِلُ حَوُبَتِیُ وَاَجِبُ دَعُوَتِیُ
وَثَبِّتُ حُجَّتِیُ وَاهُدِ قَلُبِیُ وَسَدِّدُ لِسَانِیُ وَاسُلُلُ سَخِیُمَةَ
قَلُبِیُ. (سنن أبی داؤد:1510)

“ऐ मेरे रब! मेरी मदद फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ किसी की मदद ना कर, मेरी नुसरत फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ किसी की नुसरत ना कर। मेरे हक़ में तदबीर फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ तदबीर ना कर। मुझे हिदायत दे और मेरी हिदायत को मेरे लिए आसान फ़रमा दे। जो मेरे ख़िलाफ़ बग़ावत करे उसके मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा। ऐ अल्लाह! मुझे अपना शुक्र करने वाला, अपना ज़िक्र करने वाला, तुझी से डरने वाला, तेरा अज़ हद इताअत गुज़ार और तेरी तरफ़ बहुत ही तवाज़ोअ करने वाला बना दे। ऐ मेरे रब! मेरी तौबा क़ुबूल कर ले, मेरे गुनाहों को धो डाल, मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा, मेरी हुज्जत क़ायम फ़रमा दे, मेरे दिल को हिदायत दे, मेरी ज़ुबान को (हक़ पर) क़ायम रख और मेरे दिल के मैल-कुचैल (बुग्ज़, हसद और कीना वगैरह) को निकाल दे।”

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا،وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ،وَاجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِکَ مُثْنِيْنَ بِهَا قَائِلِيْنَ بِهَا وَاَتِمِمْهَا عَلَيْنَا. (الادب المفرد:630)

“ऐ हमारे रब! हमारे दर्मियान इस्लाह फ़रमा, हमें इस्लाम के रास्तों पर चला और हमें अंधेरों से रोशनी की तरफ़ निजात दे दे। हमसे ज़ाहिरी व बातिनी बेहयाईयों को फ़ेर दे और हमारे लिए हमारे कानों, हमारी आँखों, हमारे दिलों, हमारे अज़वाज और हमारी औलादों में बरकत अता फ़रमा, हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा क्योंकि तू बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला, बहुत मेहरबान है, हमें अपनी नेअमतों का शुक्रगुज़ार बना, उसकी तारीफ़ करने वाला बना, उसका क़ाइल (ज़ुबान से बयान करने वाला) बना दे और उनको हम पर मुकम्मल फ़रमा।”

नेअमतों का ऐतराफ करना

31.اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ. (صحيح البخاری:6306)

“ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं। तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और जहाँ तक मेरी इस्तिताअत है तेरे अहद व पैमान पर क़ायम हूँ। मैं तुझसे अपने कामों के शर से पनाह लेता हूँ और अपने ऊपर तेरी नेअमतों का ऐतराफ करता हूँ और मैं अपने गुनाहों का भी इक़रार करता हूँ पस तू मुझे बख़्दे दे क्योंकि तेरे इलावा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता।”

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ اَزْوَاجِنَـا وَذُرِّيَّـاتِـنَـا،وَتُـبْ عَـلَيْنَا اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ
الرَّحِيْمُ،وَاجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِيْنَ بِهَا قَائِلِيْنَ بِهَا
وَ اَتِمِمْهَا عَلَيْنَا. (الادب المفرد:630)

“ऐ हमारे रब! हमारे दर्मियान इस्लाह फ़रमा, हमें इस्लाम के रास्तों पर चला और हमें अंधेरों से रोशनी की तरफ़ निजात दे दे। हमसे ज़ाहिरी व बातिनी बेहयाईयों को फ़ेर दे और हमारे लिए हमारे कानों, हमारी आँखों, हमारे दिलों, हमारे अज़्वाज और हमारी औलादों में बरकत अता फ़रमा, हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा क्योंकि तू बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला, बहुत मेहरबान है, हमें अपनी नेअमतों का शुक्रगुज़ार बना, उसकी तारीफ़ करने वाला बना, उसका क़ाइल (ज़ुबान से बयान करने वाला) बना दे और उनको हम पर मुकम्मल फ़रमा।”

नेअमतों का ऐतराफ करना

31.اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ
وَاَنَا عَلٰی عَهْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِکَ مِنْ
شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ
فَاغْفِرْ لِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ. (صحیح البخاری:6306)

“ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं। तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और जहाँ तक मेरी इस्तिताअत है तेरे अहद व पैमान पर क़ायम हूँ। मैं तुझसे अपने कामों के शर से पनाह लेता हूँ और अपने ऊपर तेरी नेअमतों का ऐतराफ करता हूँ और मैं अपने गुनाहों का भी इक़रार करता हूँ पस तू मुझे बख़्दे दे क्योंकि तेरे इलावा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता।”

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

हमेशा रहने वाली नेअमतों का सवाल करना

32. اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسْاَلُکَ اِیْمَانًا لَا یَرْتَدُّ وَنَعِیْمًا لَا یَنْفَدُ وَمُرَافَقَةَ مُحَمَّدٍ ﷺ فِیۡ اَعْلٰی جَنَّةِ الْخُلْدِ.

(سلسلة الصحيحة، ج:5، 2301)

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ऐसे ईमान का सवाल करता हूँ जिसमें कभी इरतदाद ना आए, ऐसी नेअमतों का सवाल करता हूँ जो कभी ख़त्म ना हों और हमेशा की जन्नत के बुलन्द हिस्से में मोहम्मद ﷺ की रफ़ाक़त का सवाल करता हूँ।”

33. اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ کُلُّهُ اَللّٰھُمَّ لَا قَابِضَ لِمَا بَسَطْتَ وَلَا مُقَرِّبَ لِمَا بَاعَدْتَ وَلَا مُبَاعِدَ لِمَا قَرَّبْتَ وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَیْتَ اَللّٰھُمَّ ابْسُطْ عَلَیْنَا مِنْ بَرَکَاتِکَ وَرَحْمَتِکَ وَفَضْلِکَ وَرِزْقِکَ اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسْاَلُکَ النَّعِیْمَ الْمُقِیْمَ الَّذِیۡ لَا یَحُوْلُ وَلَا یَزُوْلُ اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسْاَلُکَ النَّعِیْمَ یَوْمَ الْعَیْلَةِ وَالْاَمْنَ یَوْمَ الْحَرْبِ اَللّٰھُمَّ عَائِذًا بِکَ مِنْ سُوْءِ مَا اَعْطَیْتَنَا وَشَرِّ مَا مَنَعْتَ مِنَّا. (الادب المفرد:699)

“ऐ अल्लाह! सारी की सारी तारीफ़ तेरे ही लिए है, ऐ अल्लाह! जो तू फैला दे उसे कोई समेटने वाला नहीं, जो तू दूर कर दे तो कोई उसे नज़दीक करने वाला नहीं, जिसे तू नज़दीक कर दे तो उसे कोई दूर करने वाला नहीं, जिससे तू रोके उसे कोई देने वाला नहीं, और जिसे तू दे उसको कोई रोकने वाला

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

नहीं। ऐ अल्लाह! हम पर अपनी बरकात, अपनी रहमत, अपने फ़ज़्ल और अपने रिज़्क़ को फैला दे। ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे ऐसी नेअमतें माँगता हूँ जो हमेशा क़ायम रहें ना (तेरी इताअत में) हाइल हों और ना ज़ाइल हों। ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे तंगी के दिन नेअमत और जंग के दिन अमन का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! (मैं) तेरी पनाह में आता हूँ उस चीज़ की बुराई से जो तूने हमें अता की और उस चीज़ के शर से जो तूने हमसे रोक ली।"

नेअमतों के ज़वाल से पनाह माँगना

34.اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِکَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِکَ وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِکَ وَجَمِيْعِ سَخَطِکَ.

(صحيح مسلم:6943)

"ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी पनाह लेता हूँ तेरी नेअमत के ज़वाल से, तेरी आफ़ियत के पलटने से, तेरी सज़ा के अचानक वारिद होने से और तेरी तमाम नाराज़गियों से।"

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَيْنَ الشَّاكِرُوْنَ؟

Shukr Guzar Kahan Hein?

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.